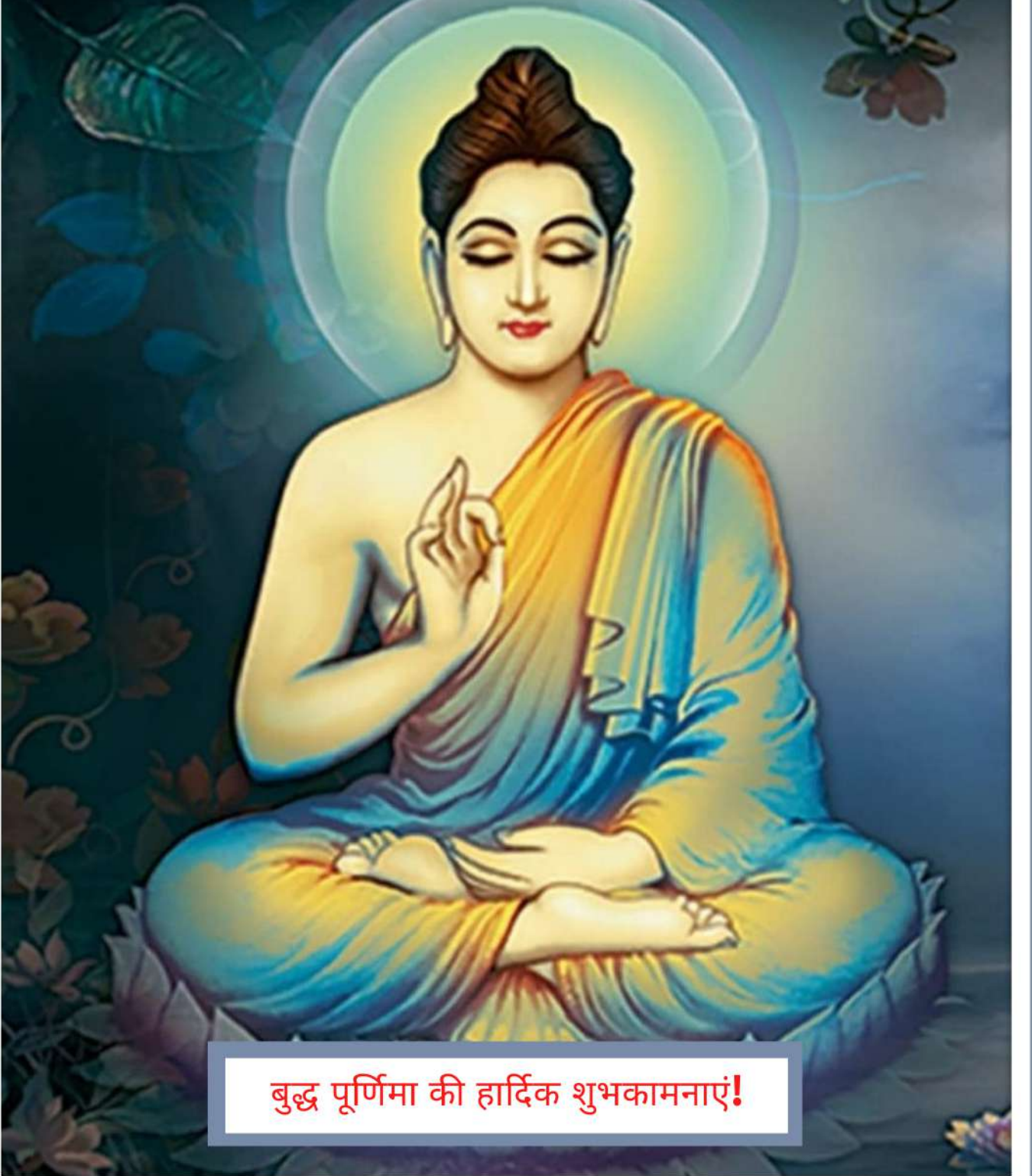


वर्ष: 16 | अंक : 5 | मई 2025 | मूल्य: ₹ 10 /=-

हंसलोक संदेश



बुद्ध पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएं!

भारतीय संस्कृति, अध्यात्म व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका



हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-16, अंक-5
मई, 2025
वैशाख-ज्येष्ठ, 2082 वि.स.
प्रकाशन की तारीख
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महारौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल
एरिया, फेस-I, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह

मूल्य-एक प्रति-रु.10/-

पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:

कार्यालय: हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,

B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,

छतरपुर, नई दिल्ली-110074

संपर्क सूत्र-011-26652101/102

मो. नं. : 8800291788, 8800291288

Email: hansloksandesh@gmail.com

Website: www.hanslok.org

Subject to Delhi Jurisdiction

RNI No. DEL.HIN/2010/32010

संपादकीय

परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है

प्रकृति नित्य परिवर्तनशील है; समय भी हर पल बदलता रहता है। विर्सजन के बाद पुनः सृजन और पतझड़ के बाद बसंत के आगमन का क्रम अनादिकाल से चल रहा है। परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं, दशाएँ और अवस्थाएँ बदलती हैं और इन कारणों से जीवन में हमारी भूमिकाएँ भी बदलती हैं। हम यथार्थ ज्ञान का आश्रय लेकर इस परिवर्तनशील जगत के सत्य को जान सकते हैं! यदि परिवर्तनों को स्वीकार ना किया जाए तो हमारा अस्तित्व भी संकट में आ सकता है। परिवर्तन को स्वीकार कर ही हम अपनी हताशा-निराशा से उबर सकते हैं और समय के साथ चलकर अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं। हम प्रकृति के इस नियम को जब भी मानने से अस्वीकार करने लगते हैं, तब हम दुःखी होते हैं, अवसाद से घिर जाते हैं। हमें स्वीकारना होगा कि जब अच्छे दिन स्थायी नहीं रहते, तो बुरे दिन भी नहीं रहेंगे। जो व्यक्ति इस सत्य को जान लेता है, वह कभी निराश-हताश नहीं होता। उसका कर्मशील जीवन अत्यन्त पुष्ट होकर सामने आता है। वह जानता है कि समय के साथ किसी भी वस्तु, विषय और विचार में भिन्नता आती है। काल, समय, ऋतु बदलते रहते हैं।

समय के साथ उत्तरोत्तर बदलने को ही विकास कहा जाता है। यदि हम बदलाव से मुँह चुरायेंगे, तो हमारा विकास नहीं हो सकेगा। वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो संसार में कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं, जो स्थिर रहता है। उसमें कुछ न कुछ परिवर्तन सदैव होता रहता है। इसी तरह समाज में भी परिवर्तन होता है। यदि हम समाज में निरन्तरता को बनाए रखना चाहते हैं तो हमें यथास्थिति को छोड़ अपने आचार-व्यवहार को परिवर्तनोन्मुख बनाना ही होगा। तभी हमारी प्रगति सम्भव है। इसके उलट, यदि हम परिवर्तन को स्वीकार नहीं करते, तो हम रूढ़िवादी हो जाते हैं। ठहरे हुए जल की तरह, जिसका सड़ना निश्चित है। परिवर्तन को स्वीकारना साहस का काम है, क्योंकि इसके लिए गतिशील-कर्मशील होना होगा, जीवन में आई चुनौतियाँ से संघर्ष करना होगा। संघर्ष ही हमारे जीवन में विकास के बीज बोता है। इसी तरह हमारे जीवन में जो विपरीत परिस्थितियाँ आती हैं, वे ही हमारे विकास और सृजनात्मकता में सहायक बनती हैं। बस, हमें बिना आपा खोए उनसे संघर्ष करना चाहिए। यदि हम यह चाहते हैं कि हमारे जीवन में अच्छा ही घटित होता रहे और बुरा कुछ भी न हो, तो यह अच्छा भी बुरा लगने लगेगा। जीवन में दुःख और सुख दोनों ही आते हैं। इसलिए जीवन में आए परिवर्तनों को स्वीकारें और उस अपरिवर्तनशील सत्ता को जानकर उसमें अवस्थित हो, जीवन के घटनाक्रम का पूरा आनन्द लें। ■

महान पतिव्रता सती सावित्री

भारतीय परंपरा में सती, सावित्री, सीता, कुंती, द्रौपदी, तारा आदि को प्रातः स्मरणीय नारियों के रूप में वंदनीय माना जाता है। इन सभी स्त्रियों में एक विशेष बात ये थी कि ये अपने अधिकारों के लिए लड़ने वाली रही थीं। सावित्री और सत्यवान की कथा को भी आमतौर पर एक अबला नारी के पतिव्रत धर्म की जीत के रूप में दिखाया जाता रहा है। महाभारत के वन पर्व की कथा को पढ़ने से हमें ये पता चलता है कि किस प्रकार सावित्री ने अपनी बुद्धिमत्ता और वाक् चातुर्य से अपने मृत पति सत्यवान को पुनः जीवित करने में सफलता प्राप्त की थी। मूल कथा यही है कि सावित्री अपनी इच्छा से अपने वर के रूप में सत्यवान का चुनाव करती हैं। सत्यवान के पिता अश्वपति अंधे थे और उन्हें अपने राज्य से च्युत होकर वन में रहना पड़ रहा था। ये सब जानते हुए भी सावित्री ने सत्यवान से अपनी इच्छा से विवाह किया था। वो इतनी तेजस्वी थीं कि उनके तेज को धारण करने में कोई भी पुरुष सक्षम नहीं था। लेकिन सावित्री ने विवाह के लिए सत्यवान जैसे तपस्वी और तेजस्वी पुरुष का चुनाव किया। सत्यवान के बारे में ये भविष्यवाणी थी कि वो अल्पायु होंगे और एक खास तिथि को उनकी मृत्यु हो जाएगी। वो दिन जब आया तो सावित्री ने दिन भर उपवास किया और अपने पति के साथ लकड़ी लाने के लिए जंगल चली गईं। सत्यवान को सिर में तेज दर्द हुआ और वो मृत हो गए। सावित्री ने देखा कि सत्यवान के पास एक दिव्य पुरुष खड़ा है। सावित्री ने उस दिव्य पुरुष का परिचय पूछा तो उस दिव्य पुरुष ने अपना नाम यमराज बताया। यमराज ने कहा कि वो सत्यवान की आत्मा को ले जाने के लिए आए हैं। सावित्री भी यमराज के पीछे-पीछे चल पड़ीं। यमराज ने सावित्री से कहा कि वो वापस लौट जाएँ; क्योंकि अभी सावित्री का जीवन बाकी है। सावित्री ने कहा कि जहाँ उनके पति हैं, वहीं उनका होना धर्म है:-

यत्र मे नीयते भर्ता स्वयं वा यत्र गच्छति।

मया च तत्र गन्तव्यमेष धर्मः सनातनः ॥

जहाँ मेरे पति ले जाये जाते हैं अथवा स्वयं ये जहाँ जा रहे हैं, वहीं मुझे भी जाना चाहिए, यही सनातन धर्म है। इसके बाद सावित्री अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करते हुए यमराज को निरुत्तर करती हैं। सावित्री बोलीं- तत्त्वार्थदर्शी विद्वान् ऐसा कहते हैं कि सात कदम साथ चलने से मैत्री संबंध स्थापित हो जाता है, इसी मित्रता को सामने रख कर मैं आपसे कुछ निवेदन करूंगी, उसे सुनिए। इसके बाद सावित्री यमराज के सामने अपने धर्म ज्ञान का परिचय देती हैं, जिससे यमराज संतुष्ट हो जाते हैं और सावित्री से एक वरदान मांगने के लिए कहते हैं:-

निर्वत तुष्टौस्मि तवानया गिरा स्वराक्षरव्यंजनं हुतयुक्तया।

वरं वृणीष्वेह विनास्य जीवितं ददानि ते सर्वमनिदिते वरम्॥

यमराज बोले- अनिदिते! तू लौट जा। स्वर, अक्षर, व्यंजन एवं युक्तियों से युक्त तेरी इन बातों से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। तू यहाँ मुझसे कोई वर मांग ले। सत्यवान के जीवन के सिवा मैं और सब कुछ तुझे दे सकता हूँ। सावित्री ने यमराज को पहली बार निरुत्तर करने के बाद उनसे स्वयं के लिए नहीं बल्कि अपने अंधे श्वसुर द्युमत्सेन के लिए



वरदान के रूप में आँखों की ज्योति माँग ली। इसके बाद यमराज से सावित्री को लौट जाने के लिए कहा, लेकिन सावित्री ने लौटने से इंकार कर दिया और फिर एक और युक्ति लगा कर यमराज को एक और वर देने के लिए विवश कर दिया।

सतां सकृत्संगतमीप्सितं परं ततः परं मित्रमिति प्रचक्षते।

न चाफलं सत्पुरुषेण संगतं ततः सतां सन्निवसेत समागमे॥

सावित्री ने कहा- सत्पुरुषों का एक बार समागम भी अत्यंत अभीष्ट होता है। उनके साथ मित्रता हो जाना उससे भी बढ़कर बताया गया है। साधु पुरुष का संग कभी निष्फल नहीं होता। अतः सदा सत्पुरुषों के समीप ही रहना चाहिए। पहले सावित्री ने यमराज को मित्र बनाया, इसके बाद सावित्री ने यमराज को सत्पुरुष कह कर उन्हें प्रसन्न कर लिया। यमराज एक बार फिर से वरदान देने के लिए विवश हो गए। एक बार फिर सावित्री ने अपने लिये वरदान नहीं मांगा बल्कि अपने श्वसुर द्युमत्सेन को उनका राज्य प्राप्त करने का वरदान यमराज से मांग लिया। यमराज एक बार फिर विवश थे। उन्होंने सावित्री के श्वसुर का राज्य वापस करने का वरदान दे दिया। यमराज ने एक बार फिर सावित्री से लौट जाने का आग्रह किया। लेकिन सावित्री ने फिर अपने वाक् चातुर्य के द्वारा यमराज को एक और वरदान देने के लिए मजबूर कर दिया। सावित्री बोलीं- देव! इस सारी प्रजा को आप नियम से संयम में रखते हैं और उसका नियमन करके आगे अपनी इच्छा

से विभिन्न लोकों में ले जाते हैं। इसलिए आपका “यम” नाम सर्वत्र विख्यात है। मैं जो बात कहती हूँ, उसे आप सुनिये!

प्रायः इस संसार के लोग अल्पायु होते हैं। मनुष्यों की शक्तिहीनता तो प्रसिद्ध ही है। आप जैसे संत-महात्मा तो अपनी शरण में आए हुए शत्रुओं पर भी दया करते हैं। फिर आप हम जैसे दीन मनुष्यों पर दया क्यों नहीं करेंगे? पहले वरदान के पूर्व सावित्री ने यमराज को अपना मित्र बनाया। दूसरे वरदान के पूर्व उन्हें सत्पुरुष कह कर उन्हें प्रसन्न कर लिया। तीसरे वरदान के पूर्व सावित्री ने उन्हें दयावान संत का दर्जा दे दिया। अब यमराज के पास कोई चारा नहीं रहा, उन्होंने फिर से सावित्री से एक और वरदान मांगने के लिए कहा। सावित्री ने एक बार फिर अपने लिए कुछ नहीं मांगा। सावित्री ने इस बार अपने पिता अश्वपति के लिए सौ पुत्रों का पिता होने का वरदान मांगा। प्रसन्न यमराज ने सावित्री को वो तीसरा वरदान भी दे दिया, लेकिन अभी तक यमराज सत्यवान को फिर से जीवित करने के लिए तैयार नहीं थे। यमराज ने एक बार फिर सावित्री को लौट जाने के लिए कहा। सावित्री ने आखिरी युक्ति ऐसी निकाली जिसका कोई जवाब यमराज के पास भी नहीं था।

सावित्री बोलीं- देवेश्वर! आप विवस्वान (सूर्य) के प्रतापी पुत्र हैं, इसलिए विद्वान पुरुष आपको वैवस्वत कहते हैं। आप समस्त प्रजा के साथ समतापूर्वक धर्मानुसार आचरण करते हैं, इसलिए आप धर्मराज कहे जाते हैं।

आत्मन्यपि न विश्वासस्तथा भवति सत्सु यः।

तस्मात् सत्सु विशेषेण सर्वः प्रणयमिच्छति॥

सावित्री बोलीं- मनुष्य को अपने आप पर भी उतना विश्वास नहीं होता है, जितना संतों पर होता है। इसलिए ये सब लोग संतों से विशेष प्रेम करना चाहते हैं।

सौहृदात् सर्वभूतानां विश्वासो नाम जायते।

तस्मात् सत्सु विशेषेण विश्वासं कुरुते जनः॥

सावित्री बोलीं- सौहार्द्र से ही समस्त प्राणियों का एक दूसरे के प्रति विश्वास उत्पन्न होता है। संतों में सौहार्द्र होने के कारण ही सब लोग उन पर अधिक विश्वास करते हैं। सावित्री ने यमराज को ‘संत’ कहकर उनका ‘सौहार्द्र’ प्राप्त करने का प्रयास किया। यमराज जो अब तक सावित्री से ‘मित्रता’ के बंधन में बंध चुके थे, ‘सत्पुरुष’ बना कर सावित्री उनके साथ सत्संग का लाभ उठा कर वरदान प्राप्त कर चुकी थी। यमराज को दयालु बता कर तीसरा वरदान भी दया स्वरूप प्राप्त कर चुकी थी। अब सावित्री ने ‘सौहार्द्र और परस्पर विश्वास का संबंध’ यमराज से स्थापित कर लिया। यमराज इस सौहार्द्र और विश्वास के संबंध से कुछ इस तरह घिरे कि उन्होंने सावित्री से एक और वरदान मांगने के लिए कह ही दिया, लेकिन यमराज अभी भी सत्यवान को जीवित करने के अतिरिक्त ही कोई वरदान देने के लिए तैयार थे।

यमराज बोले- कल्याणि! तूने जैसी बात कही है, वैसी मैंने तेरे सिवा किसी दूसरे के मुख से नहीं सुनी है। शुभे! तेरी इस बात से मैं

बहुत संतुष्ट हूँ। तू सत्यवान के जीवन के सिवा कोई और चौथा वर मांग ले और यहाँ से लौट जा। सावित्री ने यमराज के वरदान मांगने के आदेश पर ऐसी युक्ति लगाई जिसकी कोई मिसाल नहीं मिलती। सावित्री ने सीधे-सीधे सत्यवान का जीवन नहीं मांगा बल्कि एक ऐसा वरदान मांगा जिसके बाद यमराज के पास सत्यवान को जीवित करने के अलावा और कोई रास्ता बच ही नहीं गया।

ममात्मजं सत्यवतस्तथौरसं भवेदुभाभ्यामिह यत् कुलोद्भवम्।

शतं सुतानां बलवीर्यशालिना. मिदं चतुर्थं वरयामि ते वरम्॥

सावित्री बोलीं- मेरे और सत्यवान दोनों के संयोग से कुल की वृद्धि करने वाले, बल और पराक्रम से सुशोभित सौ औरस पुत्र हों। यह मैं आपसे चौथा वर मांगती हूँ। इस वरदान में सावित्री ने ये स्पष्ट कर दिया कि उनके औरस पुत्र सत्यवान से ही हों। अब ये स्पष्ट नहीं था कि सत्यवान शरीर धारण करके पुत्र उत्पन्न करेंगे या फिर अशरीरी रूप में यमराज के चमत्कार के द्वारा सावित्री को सत्यवान से पुत्रों की प्राप्ति होगी?

यमराज बोले- अबले! तुझे बल और पराक्रम से संपन्न सौ पुत्र प्राप्त होंगे, जो तेरी प्रसन्नता को बढ़ाने वाले होंगे। राजकुमारी! अब तू लौट जा, जिससे तुझे थकावट न हो। तू रास्ते से बहुत दूर चली आई है। यमराज इतनी देर में सावित्री की बुद्धि, धर्मज्ञान और उनके गुणों से इतने प्रभावित हो चुके थे कि उन्हें याद ही नहीं रहा कि बिना पति के संयोग से औरस पुत्रों की प्राप्ति संभव ही नहीं है। यमराज ने बिना विचार किए ही सावित्री के ज्ञान से वशीभूत होकर यह वरदान दे दिया। सावित्री ने यमराज को इस भूल की तरफ ध्यान दिलाते हुए कहा कि-

न तैपवर्गः सुकृताद् विनाकृतस्तथा यथान्येषु वरेषु मानद।

वरं वृणे जीवतु सत्यवानयं यथा मृता हवेमहं पतिं विना॥

सावित्री ने कहा- मानद! आपने मुझे जो पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया है, वह पुण्यमय दांपत्य संयोग के बिना सफल नहीं हो सकता। अन्य वरों की जैसी स्थिति है, वैसी इस अंतिम वरदान की नहीं है। इसलिए मैं पुनः यह वर मांगती हूँ कि ये सत्यवान जीवित हो जाएँ, क्योंकि पति के बिना मैं मरी हुई के समान ही हूँ। यमराज के पास अब सत्यवान को जीवित करने के सिवा कोई रास्ता नहीं बचा। यमराज ने सत्यवान को जीवित कर दिया और सावित्री ने अपने ज्ञान, पातिव्रत्य और बुद्धि कौशल से अपने पति को पुनः प्राप्त कर लिया। सावित्री ही नहीं सीता जी भी इतनी सक्षम स्त्री थीं कि वो त्रिलोक विजयी रावण की लंका में अपहृत होने के बावजूद रावण के साथ जो संवाद स्थापित करती हैं, उसमें उनकी निडरता और अपने पति श्री राम के प्रति अगाध प्रेम ही स्थापित होता है। द्रौपदी न केवल अपने पतियों के साथ वन गमन करती हैं, बल्कि वो लगातार युधिष्ठिर और अन्य पांडवों को प्रोत्साहित करती रहती हैं। तारा अपने पति बालि को लगातार सही शिक्षा देने की कोशिश करती रहती हैं। यही सनातन धर्म में स्त्रियों की सम्मानित और सबल स्थिति की परंपरा रही है। इन भारतीय नारियों का जीवन चरित्र सदैव समस्त नारियों के लिए अनुकरणीय रहेगा। ■

भगवान के सच्चे नाम को जपने से ही कल्याण

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! भगवान नारायण तो अन्दर हृदय में हैं और हम बाहर ढूँढ़ रहे हैं। काल के हाथ में कमान है, न जाने कब पकड़कर ले जाये? इसलिए समय रहते हुए हृदय स्थित भगवान के सच्चे नाम को जानना चाहिए।

बड़े-बड़े चक्रवर्ती राजा भी हाथ पसार कर दुनियां से चले गये। किसी को भी इस धोखे में भी नहीं रहना चाहिए कि अभी तो बहुत समय है, भजन बाद में कर लेंगे। काल का कोई भरोसा नहीं कि वह किस समय और किस बहाने आ जाये। इसलिए अच्छे काम को जल्दी से करना चाहिए।

रामचरित मानस में लिखा है कि दुनियाँ में जितना पुण्य-तीर्थ, व्रत, यज्ञ और हवन आदि करते हैं, उसका फल तो अगले जन्म में मिलेगा, लेकिन सत्संग रूपी गंगा में नहाने का फल तत्काल मिलता है। कहा है कि-

मज्जन फल पेखिये तत्काल।

काक होहिं पिक बकउ मराला।

अगर तुम सत्संग रूपी गंगा में नहा चुके हो, तो फल मिल ही गया होगा और जो गंगा में नहीं नहाया तो उसे नहा लेना चाहिए। नहाने का मतलब क्या है? हरिद्वार में चले गए, किनारे पर पहुँच गए, कपड़े भी उतार कर रख दिये; लेकिन जब तक गंगा में डुबकी नहीं लगायेंगे, तब तक नहाना तो नहीं होगा। मज्जन क्या होता है? उस सच्चे नाम

को जानना और सच्ची भक्ति का ज्ञान हो जाना; जिसमें दिया, बत्ती, घी की जरूरत नहीं है। जो मनुष्य भगवान के उस ज्ञान को, उस सच्ची भक्ति को, सच्चे नाम को



जान लेता है, उसका स्वभाव बदल जाता है, वह कौवा स्वभाव से कोयल स्वभाव का बन जाता है। बगुले के आगे दूध और पानी मिलाकर रखो, तो वह या तो दोनों को पी जायेगा या दोनों को छोड़ जायेगा, लेकिन हंस के अंदर ऐसी क्षमता होती है कि वह केवल दूध को पीयेगा और पानी को छोड़ देगा। जो सत्संग की गंगा में गोता लगाता है, तो उसकी वृत्ति हंस की जैसी वृत्ति हो जाती है। सभी धर्मशास्त्रों में भगवान के नाम की महिमा बतायी गई

है। रामचरित मानस में संत तुलसीदास जी कहते हैं-

राम एक तापस तिय तारी।

नाम कोटि खल कुमति सुधारी।

तो बताओ, वह नाम कौन-सा है? राम ने तो एक तपस्वी नारी अहिल्या का उद्धार किया, लेकिन भगवान के नाम ने तो करोड़ों दुष्टों की मति को सुधार दिया। रामचरित मानस में कहा है-

नाम प्रभाव जान गनराऊ।

प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ।

नाम के प्रभाव को गणेश जी ने जाना और उसके प्रभाव से सब देवताओं में सबसे पहले उनकी पूजा होने लगी। नाम का ऐसा प्रभाव है कि जहर भी उस पर असर नहीं करता। नाम का सुमिरण करके शिव जी ने कालकूट को पी लिया और वह उनके लिए अमृत हो गया। जिस भक्त के पास राम नाम की चिन्तामणि है, वह कभी गरीब

नहीं रहता। वह सेठों का भी सेठ होता है। उसके बराबर दुनिया में कोई धनी नहीं होता। नाम की महिमा बताते हुए संत तुलसीदास जी कहते हैं-

नाम प्रभाव सम्भु अविनासी।

साजु अमंगल मंगल रासी।

सांपों को गले में रखना, मुँडमाला पहनना। नाम के प्रभाव से इस अमंगल वेष में भी शिवजी मंगल के भंडार माने जाते हैं। भगवान राम ने भालुओं और बन्दरों की सेना इकट्ठी की, रामेश्वरम

में पुल बनाया और तब समुद्र को पार किया। लेकिन यहाँ तो नाम लेते ही संसार सागर सूख जाता है, तो कौन बड़ा हुआ? तुम्हीं विचार कर लो। भगवान के नाम को जान लेने से मंगल ही मंगल हो जायेगा और अमंगल जाता रहेगा। उस नाम को यदि मनुष्य योनि में नहीं जाना तो कब जानोगे? और जो कुछ तुम जानते हो, वह तो कुछ भी नहीं है। जैसे केले का जो पेड़ होता है, उसका छिलका उतारते चले जाओ तो अन्त में कुछ नहीं रहता, वैसे ही दुनियाँ के लोगों में कहता हूँ कि जो कुछ भी पूजा-पाठ तीर्थ-व्रत, दान-पुण्य या माला फेरना जो कुछ भी करते हो, वह कुछ भी नहीं है, उससे कोई लाभ नहीं होता।

मैं हिन्दुओं को भी बताता हूँ, मुसलमानों को भी बताता हूँ, ईसाइयों को भी बताता हूँ, बौद्धों को भी बताता हूँ, जैनियों को भी बताता हूँ, क्योंकि भगवान का वह नाम तो सबके हृदय में है। सबके हृदय में होने से मैं पूछता हूँ कि बताओ, तुम उस नाम को कब जानोगे? जिसका वेद-शास्त्रों में वर्णन है, यह वही नाम है, यह वही भजन है। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

**चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ।
कलि विसेष नहिँ आन उपाऊ॥**

चारों युगों में, चारों वेदों में जिसकी महिमा है, वह क्या चीज है? वह अविनाशी है, जिस नाम को लेने से संसार सागर ही सूख जाता है। जो पहले सत्संग सुनेगा और फिर उसके बारे में पूछेगा, तो उसको हम बताते हैं। हमने लाखों, करोड़ों आदमियों को उस नाम के बारे में बताया है। हम सब जगह उस नाम की चर्चा करते हैं और जो जानना चाहते हैं, उनको बताते भी हैं।

अभी मैं मुम्बई गया था। मुम्बई में बड़ा भारी जलसा हुआ। तुम्हारे यू.पी. और महाराष्ट्र के गर्वनर भी पहुँचे। हमने सब मिनिस्टर्स को और बड़े-बड़े लोगों को निमंत्रण भेजा था, लेकिन वे नहीं आये। कहते हैं कि जब दारुण दुःख पाने का समय होता है, तो पहले ही मनुष्य की बुद्धि उल्टी हो जाती है। अगर कहीं टी-पार्टी हो तो सभी जायेंगे और इलेक्शन का टाइम हुआ तो, घर-घर जायेंगे।

मनुष्य ने खाने और कमाने में अपना सारा जन्म गंवा दिया और धन कमाया

बड़े-बड़े चक्रवर्ती राजा भी हाथ पसार कर दुनियाँ से चले गये। किसी को भी इस धोखे में भी नहीं रहना चाहिए कि अभी तो बहुत समय है, भजन बाद में कर लेंगे। काल का कोई भरोसा नहीं कि वह किस समय और किस बहाने आ जाये। इसलिए अच्छे काम को जल्दी से करना चाहिए।

तो वह भी यहीं रह गया। कितने भी दिन जिया तो क्या हुआ? मैला बनाने की मशीन ही तो रहा। हे काया गढ़ यानि शरीर में रहने वाले जीवात्मा! चेत जाओ, उठो और भगवान की भक्ति में लगे। भगवान श्रीकृष्ण गीता अध्याय 5 श्लोक 9 में कहते हैं- तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युद्ध च। सदैव, हर समय सुमिरण भी करो और लड़ाई भी करो। या तो कहो कि गीता गलत है और अगर गलत नहीं, उसे सही समझते हो तो सुमिरण को जानो। गीता अध्याय 6 श्लोक 2 में भगवान अर्जुन से कहते हैं-

**इदं तु ते गुह्यतमं
प्रवक्ष्याम्यनुसूयवे।
ज्ञान विज्ञान सहितं
यज्ज्ञात्वा मोक्षसेअशुभात॥**

हे अर्जुन! मैं तुझे एक ऐसी बात बताता हूँ, जिसे केवल जानने मात्र से तू सब बुराइयों से बच जायेगा, लेकिन वह मैं तुझे इसलिए बताता हूँ कि तू दोष दृष्टि रहित है। तू किसी के अवगुणों को नहीं देखता। शास्त्र में लिखा है-

**जड़ चेतन गुण दोषमय,
विश्व कीन्ह करतार।**

**संत हंस गुन गहहिं पय,
परिहरि वारि विकार॥**

देवताओं ने अमृत पान किया, जहर नहीं पिया। गुलाब के पेड़ में कांटे भी भगवान ने बनाये और फूल भी बनाये। जो अच्छे लोग होते हैं, वे हाथ बचाकर फूल ले लेते हैं और कांटे छोड़ देते हैं। भगवान श्रीकृष्ण थे, उन्होंने अर्जुन के अंदर एक भी अवगुण नहीं देखा। दूसरी ओर शिशुपाल था, उसने भगवान श्रीकृष्ण के अंदर 101 अवगुण गिनाये। भगवान

श्रीकृष्ण ने 100 अवगुण तक तो शिशुपाल को माफ कर दिया, लेकिन जैसे ही वह भगवान के 101 अवगुण पर पहुंचा, तो भगवान श्रीकृष्ण ने उसका सिर काट दिया।

तीन तरह के आदमी होते हैं। छलनी जैसे स्वभाव के आदमी, जो केवल दूसरों के अवगुण ही देखते हैं, गुणों को छोड़ देते हैं। जैसे छलनी, आटा तो नीचे गिरा देती है और कंकड़-पत्थर आदि अपने अन्दर रख लेती हैं। दूसरे ओखली जैसे स्वभाव के होते हैं, जिसके अन्दर चावल और भूसी दोनों रहते हैं, उनको वह अलग-अलग नहीं कर सकती और तीसरे सूप जैसे स्वभाव के होते हैं, जो केवल दूसरों के गुणों को ही ग्रहण करते हैं, अवगुणों की ओर ध्यान नहीं देते। जैसे सूप, भूसी वगैरह को अलग कर

देता है और चावल अपने पास रख लेता है। तो सूप जैसे स्वभाव के जो आदमी होते हैं, वे दूसरे के अवगुणों को नहीं देखते, वे केवल उसके गुणों को ग्रहण करने वाले होते हैं। जो दूसरे के अवगुणों को नहीं देखते, ऐसे ही लोगों को यह ज्ञान बताया जाता है।

इसीलिए भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि मैं तुझे वह ज्ञान, विज्ञान सहित बताऊंगा, जिसे जानकर तू सब प्रकार के अशुभ से बच जायेगा तुम लोगों को स्कूलों में पुस्तकें पढ़ायी जाती हैं। ज्ञान के साथ एक विषय और पढ़ाया जाता है, विज्ञान का। तो ये वैज्ञानिक लोग ही उस प्रकाश को बतावें जो सबके अन्दर है और जो बड़े प्रोफेसर्स या डाइरेक्टर्स हैं, वे भी बतावें और नहीं तो एक दोहे का अर्थ ही बता दें।

माला फेरत युग गया,

पाया न मन का फेर।

कर का मणका डार दे,

मनका मणका फेर॥

माला तो कर में फिरे,

जीभ फिरे मुख मांहि।

मनुवां तो दसों दिशि फिरे,

यह तो सुमिरण नाहिं।

आज वही माला फेरने में सब लगे हुए हैं। बिरला मन्दिर में मैंने देखा कि वहां भी माला फेर रहे हैं और चरणामृत भी देते हैं और कहते हैं-

अकालमृत्यु हरणं

सर्वव्याधि विनाशनम्।

विष्णुचरणामृतं पित्वा

पुनर्जन्म न विद्यते॥

भगवान विष्णु का चरणामृत पान करने से मृत्यु का हरण होता है, पुनर्जन्म नहीं होता और उससे सारी व्याधियां दूर होनी चाहिये, लेकिन वे

व्याधियां दूर नहीं होती, क्योंकि विष्णु का चरण धोये बिना चरणामृत कैसे बनेगा? क्या शालिग्राम को जल में डूबोने से चरणामृत बन गया? मैंने जयपुर में देखा है, लोग कैसे मूर्ति बनाते हैं। मूर्ति के ऊपर पैर रखकर उसको गढ़ते हैं। फिर उसे ले जाकर प्राण-प्रतिष्ठा करते हैं, लेकिन जब प्राण ही नहीं हैं, तो प्रतिष्ठा किस बात की? क्यों झूठ बोलते हो? भगवान को भोग लगाते हैं। परदा डाल दिया और घंटा हिला दिया।

**भगवान के नाम को जान लेने
से मंगल ही मंगल हो जायेगा और
अमंगल जाता रहेगा। उस नाम को
यदि मनुष्य योनि में नहीं जाना तो
कब जानोगे?**

भगवान् तो चाहे उसमें से रत्ती भर भी न खावें और स्वयं खूब पेट भरकर खाते हैं। कैसा दुनियाँ को पागल बना रखा है? सबको धोखा दे रखा है। पहले तो बतावें कि अकाल मृत्यु क्या है और फिर मृत्यु किसकी होती है? क्योंकि जीव ईश्वर का अंश है और जब जीव मरता ही नहीं है, तो अकाल मृत्यु किसकी होती है? और सर्व व्याधियों का नाश कैसे हो? जब विष्णु चरणामृत पिया ही नहीं, तो पुनर्जन्म कैसे नहीं होगा? अगर मूर्ति के चरण धोकर पीने से पुनर्जन्म नहीं होगा, तो खूब पीयो, मेरा उसमें कोई नुकसान नहीं है।

दुनियां के लोगों! अगर तुम अशुभ से बचना चाहते हो, तो जो ज्ञान भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया, उस ज्ञान को जानो। आज के विद्वान कहते हैं कि उस ज्ञान को कोई बता नहीं सकता, लेकिन ऐसा नहीं है। बीज का कभी नाश नहीं होता। भगवान उस ज्ञान के बारे में

कहते हैं-

राजविद्या राजगुह्यं

पवित्रमिदमुत्तमम्।

प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं

सुसुखं कर्तुमव्ययम्॥

वह राजविद्या सब विद्याओं की राजा है और सबसे ज्यादा छिपी हुई वस्तु है। पवित्र है, उत्तम है, प्रत्यक्ष फल देने वाली है और धर्म के अनुकूल है। फिर कहते हैं कि साधन करने में बड़ी ही सुगम है, हींग लगे न फिटकरी, जिसमें कुछ भी नहीं करना पड़ता।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जिसकी इस तत्त्वज्ञान रूपी धर्म में श्रद्धा नहीं है, वह मेरे को कभी प्राप्त नहीं होता और सदा संसार के अन्दर चौरासी लाख योनियों में जन्मता और मरता रहता है। तो उस तत्त्वज्ञान को तुमने कभी किसी से पूछा? अगर नहीं पूछा तो कब पूछोगे?

देखो, तीन चीजें समय की होती हैं- समय का राजा, समय का वैद्य और समय का सद्गुरु। पहले जो बड़े-बड़े दानी राजा हरिश्चन्द्र वगैरह हुए आज उनका नाम रटते रहने से तो तुम्हें एक पैसा भी नहीं मिलेगा। लुकमान हकीम या धन्वन्तरि बड़े नामी वैद्य हो गए, लेकिन आज वह तुम्हारा इलाज करने नहीं आयेंगे। आज के समय का डॉक्टर ही तुम्हारे स्वास्थ्य की जांच करेगा और दवाई भी देगा। इसी तरह से जो पूर्व में संत-महापुरुष एवं सद्गुरु हुए, वे हमें भगवान के सच्चे नाम का ज्ञान कराने नहीं आयेंगे, बल्कि जो समय के सद्गुरु होते हैं, वर्तमान के तत्त्वज्ञानी होते हैं, हमें उनकी खोज करनी होगी। इसलिए समय के सद्गुरु की खोज कर विनयपूर्वक तत्त्वज्ञान को जानो और भजन-सुमिरण करके अपने जीवन का कल्याण करो।

ज्ञानांजन सद्गुरु दिया, अज्ञान अंधेर विनाश

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! संत कबीरदास जी कहते हैं-

चलन चलन सब कोई कहे,

मोहे अन्देशा और।

नाम न जाने गांव का,

पहुंचेगा केहि ठौर॥

हमें पता नहीं कि कहां जाना है, जबकि हमारा असली मुकाम भगवद्धाम ही है। मनुष्य जीवन उसी का सार्थक है, जिसने अपने मुकाम का पता लगा लिया हो।

हम जब सफर में जाते हैं, तो साथ में बहुत सामान ले चलते हैं और टिकट लेकर रेल में सफर करते हैं। मतलब एक छोटी-सी यात्रा के लिये हम क्या-क्या नहीं करते, पर संसार से जब हम महायात्रा पर जायेंगे, तो उसके लिये हमने क्या-क्या तैयारी की है, इस पर कभी विचार नहीं करते? कहा है-

आये हैं सो जायेंगे,

राजा रंक फकीर।

एक सिंहासन चढ़ चला,

एक बंधा जाये जंजीर॥

राजा हो, चाहे रंक हो, सबको इस संसार से एक दिन अवश्य जाना है।

भगवान बुद्ध के पास सब कुछ था, लेकिन जब उनको पता चला कि मुझे भी एक दिन वृद्ध बनना है, मुझे भी एक दिन बीमार होना है, मुझे भी एक दिन संसार से जाना है, तो वह सच्चे ज्ञान की तलाश में निकल पड़े। उनके मन में तो केवल एक ही जिज्ञासा थी कि मैं उस ज्ञान को जानूं। उन्होंने सत्य की खोज की। एक जगह घोर तपस्या में बैठ गये। तपस्या में इतने लीन हो गये कि खाने-पीने की सुध तक नहीं रही और वे बड़े कमजोर हो गये। महान नारी सुजाता वहां से गुजर रही थी, उसकी दृष्टि भगवान



बुद्ध पर पड़ी। सुजाता ने बुद्ध को समझाया कि वीणा के तार को इतना भी न कसो कि तार ही टूट जाये और तार को इतना ढीला भी मत छोड़ो कि उसमें से सुर ही निकले। सुजाता ने उनको ज्ञान देकर मध्यम मार्ग पर चलने की सलाह दी। सुजाता की बात बुद्ध की समझ में आ गई। उन्होंने ज्ञान प्राप्त कर मध्यम मार्ग को अपनाया। वास्तव में हठ से ज्ञान नहीं मिलता है। ज्ञान को पाने के लिए सद्गुरु की शरण में जाना पड़ता है। बुद्ध ने सच्चा ज्ञान प्राप्त किया और आज अनेकों देशों में भगवान बुद्ध का प्रचार है।

इस प्रकार हमें भी सच्चे ज्ञान को जानना चाहिये। मनुष्य शरीर में ही उस ज्ञान को जान सकते हैं, बाकी योनियों में उसे जानना संभव नहीं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि-

ज्ञान अंजन सद्गुरु दिया,

अज्ञान अंधेर विनाश।

हरि कृपा ते संत भेटियां,

नानक मन प्रकाश॥

हमारे अन्दर प्रकाश है, उसका बोध सच्चे सद्गुरु ही कराते हैं। हम भौतिक

शिक्षा प्राप्त करने के लिये स्कूल में जाते हैं। अध्ययन के लिये हमें कितना कुछ करना पड़ता है। फीस जमा करानी पड़ती है, वर्दी सिलवानी पड़ती है। यदि स्कूल की फीस समय पर नहीं देंगे, तो स्कूल से मास्टर निकाल देगा। भौतिक शिक्षा के लिए तो लोग सब कुछ करते हैं, पर प्रभु के ज्ञान के बारे में सोचते नहीं, जबकि यही सही शिक्षा है। इसी ज्ञान से मानव का कलुषित हृदय बदलेगा, उसके विचार पवित्र होंगे। उसी ज्ञान से परिवार, समाज और देश में सद्विचार फैलते चले जायेंगे। मानव-मानव के बीच भाईचारा बढ़ेगा।

बड़े-बड़े राजा-महाराजा हमारे देश में हुए, लेकिन एक दिन उन सबको भी इस संसार को छोड़कर जाना पड़ा, वे अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा सके। इसलिए हमें सद्गुरु महाराज की खोजकर विनयपूर्वक उस आत्मज्ञान को जानना चाहिये। ज्ञान को जानने के लिए मनुष्य के अंदर प्रेम, श्रद्धा और विश्वास होना चाहिए। यदि मनुष्य के अंदर श्रद्धा-भाव नहीं होगा, तो उसे वह ज्ञान फलीभूत नहीं होगा।

शांति बाहर नहीं, तुम्हारे हृदय में ही है

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनों! चाहे आप भक्त लोग हैं या श्रोता लोग हैं, आप लोग ध्यान से सत्संग सुनो! वास्तव में जीवन में हमारे साथ बहुत से काम रहते हैं। जब तक मनुष्य जीवित रहता है, तब तक शरीर की उलझनें छूटती नहीं हैं। धर्मशास्त्रों में मनुष्यों के लिए आत्मज्ञान को जानने के लिए कहा गया है। भगवान श्री राम भी कहते हैं-

बड़े भाग मनुष्य तन पावा।

यह जो मनुष्य तन है, यह बड़े भाग्य से मिलता है। इस तन के लिए देवता लोग भी याचना करते हैं कि अगर हमें यह मनुष्य शरीर मिलता, तो हम भी सत्कर्म और भगवत् भजन करते। सचमुच में मैं ज्ञान के प्रचार के लिए बहुत से देशों में गई। मैंने जीवन में बहुत से जानवर देखे, पर मनुष्य के बराबर कोई दूसरा उपकारी मैंने नहीं देखा। वास्तव में जानवर कर्म नहीं कर सकते हैं। जितने भी जल में रहने वाले जीव हैं और जितने भी पशु-पक्षी हैं, वे कर्म नहीं कर सकते, वे तो केवल भोग ही भोग सकते हैं। उनको अच्छा से अच्छा भोजन मिल सकता है, पर वे आगे के लिए कर्म नहीं कर सकते, भगवान का भजन नहीं कर सकते। परमात्मा दयालु है और बिना कर्म किये हुए भी उन सबको भोजन देता है। ऐसे-ऐसे जानवर होते हैं, जो पानी से ही अपना आहार पूरा कर लेते हैं। उनके लिए खेती नहीं है, उनके लिए जंगल नहीं है, केवल पानी ही है। पानी में ऐसे-ऐसे तत्व मिले हैं, जिससे जानवरों को पूरा भोजन मिल जाता है। यदि पानी के जानवर को पानी से निकाल दो तो वह प्राण त्याग देता है।

ठीक यही गति मनुष्य की बताई कि मनुष्य यदि बहुत बड़ा धनवान भी बन जाये, सारे संसार का बादशाह भी बन जाये, लेकिन यदि उसने अपनी जिन्दगी में परमात्मा को नहीं जाना, भगवान के पावन नाम को नहीं जाना तो उसने जीवन में कुछ भी नहीं जाना। जीवन में मनुष्य के लिए भोजन तो जरूरी है, लेकिन उसके साथ-साथ उसे सद्गुरु महाराज से भगवान के सच्चे नाम को जानकर भजन-सुमिरण भी करना चाहिए, तभी यह मनुष्य जीवन सार्थक होगा।

जब हम बहुत छोटे थे, तब हमारे देश में बड़े-बड़े आन्दोलन हुए। उस समय हम अंग्रेजों के गुलाम थे और पूरे देश के लोगों की एक ही आवाज थी कि हमको अंग्रेजों की गुलामी से स्वतंत्र किया जाये, आजाद किया जाये। अंग्रेज हमारे देश को गुलाम बनाए हुए हैं, हम उनकी गुलामी नहीं चाहते हैं। उस समय भारत के लोगों में कितनी एकता रही होगी और आपस में कितना बड़ा संगठन रहा होगा कि दो सौ साल से जो अंग्रेज हमारी भारत भूमि पर बस गये थे, हम लोगों ने एकता के बल पर उनको उखाड़ फेंका।

पिछली बार मैं कलकत्ता गई। वहाँ प्रोग्राम में हजारों लोग शामिल हुए। वहाँ भी हमने सुनाया कि भारत को आजाद कराने के लिए उस समय देश के लोगों में कितनी एकता थी, कितना



मजबूत संगठन था। जिस आजादी के ध्येय को लेकर हम लोग चले थे, हमने एकजुटता से उसे प्राप्त कर लिया। लेकिन आजादी के बाद से जब हम लोगों के अंदर वह एकता भंग हो गई, तो हम फिर छिन्न-भिन्न होने लगे। भक्तों में एकता नहीं होने के कारण ठीक ऐसा ही हाल अध्यात्म-मार्ग में भी होता है।

चाहे राजनीति का मार्ग हो, या अध्यात्म का मार्ग हो, जब गलत लोग मिशन में घुस जाते हैं, तो वे लोग अपना हित तो समझते नहीं हैं, बल्कि अपने साथ दूसरों का अहित भी करते हैं। बड़ी से बड़ी महान् शक्तियाँ इस भूमि पर अवतरित हुई हैं। भगवान श्री राम का इतिहास ही देख लीजिये- उनका सारा जीवन कितना दुःखमय बना। भगवान श्रीकृष्ण के जीवन की तो शुरुआत ही दुःखों से हुई। कंस ने उनके माता-पिता को जेल में डाल दिया गया। वास्तव

में जब मनुष्य जीवन के ध्येय को नहीं समझता है, तो उसका मन गलत कामों की ओर जाता है। वह समाज को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास करता रहता है।

संत-महापुरुषों का ज्ञान बड़ा सूक्ष्म है और मनुष्य का मन भी बड़ा सूक्ष्म है। महापुरुष कहते हैं कि इस सूक्ष्म मन को सूक्ष्म ज्ञान में जोड़ दो, यह जो तुम्हारी चित्तवृत्ति बाहर को भाग रही है, इसको अन्दर की तरफ को मोड़ो। लेकिन मनुष्य चित्तवृत्ति को अन्दर की तरफ न मोड़ करके उसको बाहर की तरफ फैलाता है, जिससे उसका अपना भी नुकसान होगा और वह दूसरों का भी अहित करेगा।

इसलिए संत तुलसीदास जी ने दुष्ट प्रकृति के लोगों की भी वंदना की और जो सज्जन थे उनकी भी उन्होंने वन्दना की। सन्त और असन्त की तुलना उन्होंने बराबर की। कहा कि एक सन्त होता है, जिसके आने से घर में खुशी होती है, घर पवित्र होता है, आत्मा प्रसन्न हो जाती है, उसका दर्शन करके जीवन सफल हो जाता है। उन्होंने कहा कि जब असन्त आ जाता है, खराब व्यक्ति आ जाता है, तो उसके डर से सारे परिवार को अगाध दुःख पहुंचता है और जब वह बिछुड़ता है, तब सुख होता है। सन्त जब बिछुड़ता है, तब दुःख होता है। दोनों की उपमा उन्होंने बराबर दी। जैसे कि एकता और संगठन के बल पर बड़े-बड़े काम लोगों ने किये। जब एकता समाप्त हो जाती है, तब अकेला मनुष्य कुछ नहीं कर सकता है, वह छिन्न-भिन्न हो जाता है। जब परिवार के लोग घर के मुखिया के आदेश को नहीं मानें, अनुशासन में नहीं रहें और सभी लोग

आर्डर देने लग जायें, तो वह परिवार भी छिन्न-भिन्न हो जाता है।

ठीक इसी तरह यह अध्यात्म-मार्ग बड़ा सूक्ष्म मार्ग है। इस मार्ग में छल-कपट नहीं करना चाहिये। भगवान श्री राम कहते हैं-

मोहि कपट छल छिद्र ना भावा।

निर्मल मनजन सो मोहि पावा ॥

मुझको तो छल-कपट चाहिए ही नहीं, जो मनुष्य छल-कपट करके मुझे

मनुष्य यदि बहुत बड़ा धनवान भी बन जाये, सारे संसार का बादशाह भी बन जाये, लेकिन यदि उसने अपनी जिन्दगी में परमात्मा को नहीं जाना, भगवान के पावन नाम को नहीं जाना तो उसने जीवन में कुछ भी नहीं जाना।

प्राप्त करना चाहता है, वह सपने में भी मुझे प्राप्त नहीं कर सकता। आज मनुष्य छल-कपट भी करना चाहता है और परमार्थ का आनन्द भी लेना चाहता है। भाई दोनों चीज एक साथ हो नहीं सकतीं। यदि आनंद की अनुभूति करना चाहते हो, तो छल-छिद्र को छोड़ दो। मेरा मूल विषय यह था कि बहुत से लोग सुनी-सुनाई अफवाहों में भ्रमित हो जाते हैं और बहुत से लोग ऊंचाई पर चढ़ने के बाद भी गिर जाते हैं। कहा है कि जब तक अपनी आँखों से न देखो, अपने कानों से न सुनो, तब तक उस बात को नहीं मानो। देखो, महापुरुषों का जो ज्ञान है, वह सत्य होता है। महापुरुष कभी भी तुम्हें गलत मार्ग में नहीं लगायेंगे। सत्य मार्ग में ही लगाने की वे कोशिश करते हैं; पर मनुष्य सत्य को जानने की कोशिश नहीं करता है। मनुष्य सोचता है कि ये मेरा अहित चाहते हैं, मुझसे कुछ लेना चाहते हैं, लेकिन ऐसा नहीं

है। समाज में कुछ गलत लोग भी होते हैं, जो सत्य के मार्ग से तुम्हें गिराने का प्रयत्न करेंगे, वे तुम्हें सही मार्ग पर नहीं लगायेंगे। सत्य के मार्ग पर लगाने का काम तो केवल महान शक्तियाँ ही कर सकती हैं, दूसरा कोई नहीं कर सकता। गुरु महाराज जी ने जो ज्ञान तुम्हें दिया है, उसका भजन करो, सुमिरण करो। बाकी संसार की सारी चीजें तो यहीं पर छूट जायेंगी, लेकिन यह भगवान के नाम का सुमिरण ही ऐसा है, साधन ऐसा है, जो अन्तिम क्षण तक तुम्हारे साथ रहेगा। इस धन को संतों ने सबसे बड़ा धन बताया।

ज्ञान के प्रचार के लिए मैं बहुत जगह गई। सभी जगह सब लोग शान्ति चाहते हैं, हर मनुष्य शान्ति चाहता है। हर मनुष्य कहता है कि मुझे शान्ति चाहिए। अगर मनुष्य को भरपेट भोजन भी मिल जाये, तब भी भजन के बिना वह असन्तुष्ट ही रहता है। बहुत से सम्पन्न देश हैं, उन देशों में उनके जरूरत की पूरी चीजें हैं, पर फिर भी वहां के लोग बहुत अशान्त हैं, उनके मन में शान्ति नहीं है। मन की शान्ति प्राप्त करने के लिए वे भारत देश में ही आते हैं। भारत में आकर ही वे मन की शान्ति की तलाश करते हैं।

इतिहास साक्षी है कि इसी देश में महान् शक्तियों ने जन्म लिया, महापुरुषों ने जन्म लिया और इसी भारत भूमि से देश-विदेशों में ज्ञान का प्रकाश फैला है। आज भारत के लोग अपनी पवित्र भूमि को भूल चुके हैं। इस भूमि में बहुत-सी चीजें बिना एयरकन्डीशन के उगती रहती हैं। बहुत से ऐसे देश हैं, जहाँ एयरकन्डीशन के बिना कुछ होता ही नहीं है और वहां का मनुष्य एयरकन्डीशन के बिना नहीं

रह सकता है। वहां के मनुष्य के लिए कार एयरकन्डीशन चाहिए, मकान एयरकन्डीशन चाहिये, कार्यालय भी एयरकन्डीशन चाहिए और एयरपोर्ट भी एयरकन्डीशन चाहिए। मतलब कि इस तरह से उन लोगों ने शरीर को स्वस्थ रखने के साधन बनाये हुए हैं। शरीर को सुखी रखने के साधन, तो उन लोगों ने पूरे कर लिये हैं; लेकिन उनसे पूछो कि तुम्हें मन की शान्ति है क्या? तो कहते हैं कि मन हमारा बहुत अशान्त है, अभी तक हम शान्ति को प्राप्त नहीं कर सके और हम शांति की तलाश में हैं।

इसीलिए सन्तों ने बताया कि शान्ति कहीं बाहर नहीं, बल्कि मानव के हृदय के अंदर है। जब तक आत्मज्ञान को जानकर भजन नहीं करोगे, तब तक शान्ति हो ही नहीं सकती। जब माँ के गर्भ में भी भगवान जीव को पूरी खुराक पहुँचाता है, तो क्या बाहर आकर वह इतना वैरी बन चुका है जो हमको कोई चीज देगा ही नहीं? नहीं, भगवान तो हमें सब कुछ देता है, पर देखो, वास्तव में मनुष्य का मन गन्दा हो गया है। मनुष्य का मन माया में इतना वशीभूत हो गया है कि इसके कारण मनुष्य मानव को मानव नहीं समझता है। वास्तव में मनुष्य राक्षस-वृत्ति में ढलता जा रहा है। इस तरह से देश में शान्ति कैसे होगी? इस तरह से तो शान्ति नहीं हो सकती है। जैसे हर मनुष्य अपने परिवार को अच्छा बनाना चाहता है, इसी तरह से देश के हर व्यक्ति की अच्छी भावना रहेगी, तभी हमारा देश सुखी हो सकता है। आज संसार में हर मनुष्य दुःखी है, कोई अपने को सुखी महसूस नहीं करता। आज न तो धनवान ही सुखी है और

न निर्धन ही सुखी है। निर्धन तो सूखी रोटी खा सकता है, पर धनवान तो खा भी नहीं सकता। आखिर हमारी ऐसी गति कैसे हुई? जिन रास्तों से शान्ति को प्राप्त करना था, जिन संगठनों से हमको शान्ति प्राप्त होनी थी, उस मार्ग को हमने दूर छोड़ दिया। स्कूलों में बच्चों को आध्यात्मिक शिक्षा नहीं दी जाती। कबीर साहब का दोहा भी ठीक

समाज में कुछ गलत लोग भी होते हैं,
जो सत्य के मार्ग से तुम्हें गिराने का प्रयत्न
करेंगे, वे तुम्हें सही मार्ग पर नहीं लगायेंगे।
सत्य के मार्ग पर लगाने का काम तो केवल
महान शक्तियाँ ही कर सकती हैं, दूसरा
कोई नहीं कर सकता। गुरु महाराज जी ने
जो ज्ञान तुम्हें दिया है, उसका भजन करो,
सुमिरण करो।

से बच्चों को नहीं समझाया जाता है। दोहे में लिखा है कि मन की माला फेर, यानि जो यह हाथ की माला फेर रहे हो, इसको फेरते-फेरते तो कई जन्म बीत गये, जो मन के अन्दर माला फिर रही है, उस माला को फेरो, मन की माला को समझो। कबीर के इस दोहे का अर्थ अध्यापक बच्चों को नहीं समझा सकते हैं। तो इस तरह से संसार में दुःख ही दुःख है, इस जीवन में सुख नहीं है। कई बार प्राकृतिक प्रकोप होते हैं, अकाल पड़ते हैं, असमय भयंकर वर्षा होती है, जिससे कि अनाज खत्म हो जाता है।

फसलों को उपजाने के लिए बारिश की भी जरूरत होती है। यदि बारिश नहीं होगी, तो किसान कहां से कमायेगा और कहाँ से आप लोगों को अनाज सप्लाई करेगा। पेट भरने के लिए आखिर अनाज तो सबको चाहिए।

हमारे गुरु महाराज जी जो ज्ञान देते हैं, मैं सच कहती हूँ कि उसने लाखों लोगों के जीवन को बदला है। जैसे सूखी खेती में तत्काल पानी पड़ जाये, बारिश हो जाये, तब वह खेती हरी-भरी हो जाती है। ऐसे ही सत्संग और ज्ञान के अभाव में जो लोग अपने जीवन से हताश हो गये थे, उनके जीवन फिर से हरे-भरे हो गये हैं। जो लोग अपने सिद्धान्तों के

अनुसार नहीं चलते हैं, वे जीवन में दुःख ही पाते हैं। आप लोगों को गुरु महाराज जी ने महात्माओं के द्वारा ज्ञान दिलाया है। वह ज्ञान, भगवान का सच्चा नाम तुम्हारे हृदय में है, फिर भी तुम दुःखी हो, क्योंकि तुमने नाम-सुमिरण में मन को नहीं लगाया। तुम्हारी वृत्तियाँ और तुम्हारा मन बाहर जा रहा है। देखो, एक छोटी क्लास का विद्यार्थी होता है, तो अध्यापक

के द्वारा उसको ए. बी. सी. डी. और अ, आ, इ, ई का ज्ञान कराया जाता है। अध्यापक के बिना वह विद्यार्थी किताबी ज्ञान को नहीं सीख सकता है। इसी तरह से गुरु महाराज जी का जो ज्ञान है, सचमुच में उससे हृदय में बड़ी शान्ति मिलती है। श्री हंस जी महाराज जी का जीवन अनेक कठिनाइयों और संघर्षों में बीता, लेकिन वे सत्य और धर्म के मार्ग से कभी भी विचलित नहीं हुए। श्री हंस जी महाराज ने कठोर परिश्रम करके लाखों लोगों को अध्यात्म ज्ञान देकर सत्य एवं धर्म के मार्ग पर लगाया। अपने शिष्यों से भी उन्होंने अपेक्षा रखी कि वे सद्मार्ग का अनुसरण करें और दूसरों को भी सत्यमार्ग पर लगाने के लिए सत्संग प्रचार करें। आप सब उनके बताते रास्ते पर चलो, इसी से तुम्हारी आत्मा का भला होगा।

सत्संग से ही आता है जीवन में सकारात्मक परिवर्तन

माताश्री मंगला जी

प्रेमी सज्जनों! आप लोगों ने गुरु महाराज जी का सत्संग सुना। जो भक्त इस पण्डाल में बैठे हुए थे, उनके अंदर सत्संग, दर्शन, भजन और सेवा का पुण्य जमा हुआ। जब एक भक्त प्रोग्राम में सत्संग सुनकर अपने घर वापस जाता है, तो घर जाकर अनेक चिंताओं में वह भूल जाता है कि मुझे गुरु महाराज जी ने क्या सत्संग सुनाया था, जोकि मेरे लिये कल्याणकारी है। संत तुलसीदास कहते हैं-

सुत दारा अरु लक्ष्मी,

पापी घर भी होय।

संत समागम हरि कथा,

तुलसी दुर्लभ दोय।।

बेटा, सुन्दर नारी और धन तो पापी के घर में भी हो सकता है, लेकिन संतों का समागम और हरि की कथा किसी भाग्यशाली मनुष्य को ही प्राप्त होती है। सत्संग की इतनी महानता है कि वह मनुष्य को दानवता से मानवता की ओर ले जाता है। सत्संग मनुष्य को महामानव बना देता है। यदि मनुष्य के जीवन में सत्संग और सन्त नहीं आते, तो किसी भी काल में वह शान्त नहीं रह पाता। विपत्ति आने पर जब-जब भक्तों ने पुकार की तो भगवान ने आकर उनकी सहायता की और भक्तों को गले लगाया।

भक्त का सहारा केवल भगवान ही है, पर वह उसी भक्त को गले लगाता है, जो उसको हर समय याद करता है। एक समय दुर्योधन के पास दुर्वासा ऋषि जाते हैं, दुर्योधन उनकी बहुत आवभगत करता है, तो दुर्वासा ऋषि उसको आशीर्वाद देते हैं। दुर्योधन प्रार्थना करता है कि हे ऋषिवर, आप पाण्डवों के यहां भोजन



करने जरूर जायें। दुर्वासा पाण्डवों के पास भोजन करने को जाते हैं, क्योंकि उस समय पाण्डवों की स्थिति बहुत दयनीय थी, वे बेघर थे; उनके पास राजपाट और धन्य-धान्य कुछ भी नहीं था, लेकिन उनके साथ में महान शक्ति थी, भगवान् श्रीकृष्ण उनके साथ थे। दुर्योधन जानता था कि दुर्वासा ऋषि अपने ऋषि-मुनियों के साथ पाण्डवों के पास भोजन करने जायेंगे और पाण्डवों के पास कुछ भी नहीं है, तो दुर्वासा क्रोध में आकर पाण्डवों को श्राप दे देंगे। बुरा व्यक्ति हमेशा दूसरे का बुरा ही चाहता है, दूसरे का अहित ही चाहता है।

पाण्डवों के पास खबर आई कि दुर्वासा अपने ऋषि-मुनियों के साथ भोजन करने आ रहे हैं। तो द्रौपदी पाण्डवों के साथ जंगल में थी। वह बड़ी चिंतित हो गई और भगवान से प्रार्थना करने लगी कि हे प्रभु! अब क्या होगा? दुर्वासा का क्रोध तो सर्वविदित है। यदि उनको हमारे भोजन से संतुष्टि नहीं हुई, तो वे हमें श्राप दे देंगे। हे प्रभु, अब

आप हमारे कष्ट को दूर करो। भगवान श्रीकृष्ण वहां प्रकट हो गये और कहते हैं कि हे द्रौपदी! आज तुमने भोजन में क्या पकाया? द्रौपदी ने जब हंडिया देखी, तो उसमें कुछ भी नहीं था, सभी पाण्डव भाई भोजन कर चुके थे। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि हंडिया के किसी भी कोने में कुछ तो चिपका होगा, वह तू मुझे दे दे। द्रौपदी देखती है कि कोने में साग लगा हुआ है। भगवान श्रीकृष्ण उस साग को खाते हैं। इसी दौरान जब दुर्वासा ऋषि अनेक ऋषि-मुनियों के साथ स्नान करके लौटे, तो सबके पेट अफर जाते हैं, बिना भोजन किये सबके पेट भर जाते हैं। दुर्वासा ऋषि सोचते हैं कि हम अब पाण्डवों के पास भोजन करने किस मुंह से जायेंगे? पाण्डवों के पास सन्देश भिजवा देते हैं कि हमारे तो पेट भरे हुये हैं। इस तरह भगवान श्रीकृष्ण ने द्रौपदी और पाण्डवों की रक्षा की।

सचमुच जब भक्त सच्चे हृदय से प्रभु को पुकारता है, प्रभु को याद करता है,

भगवान के नाम का सुमिरन करता है, तो भगवान उसकी अवश्य रक्षा करते हैं। जब दुःशासन भरी सभा में द्रौपदी की साड़ी खींच रहा था, तो सबसे पहले उसने अपने पांचों पतियों पाण्डवों की ओर देखा। शर्म के मारे सबके सिर नीचे झुके हुये थे, कोई भी द्रौपदी की रक्षा के लिये आगे नहीं बढ़ रहा था। लेकिन जैसे ही द्रौपदी ने सच्चे हृदय से भगवान को पुकारा, तो भगवान श्रीकृष्ण तुरन्त आ गये और कहने लगे कि हे द्रौपदी, अगर तू मुझे पहले ही पुकार लेती, तो तुझे इतना कष्ट नहीं होता। तूने सोचा कि पांच पति मेरी रक्षा करेंगे, भीष्म पितामह मेरी रक्षा करेंगे, सारे राज दरबार में से मेरी रक्षा के लिए कोई न कोई उठेगा, परन्तु जब किसी ने रक्षा नहीं की, तब तूने मुझे पुकारा। द्रौपदी, अगर तू पहले ही पुकार लेती तो क्या मजाल जो दुःशासन तेरी काया को भी छू पाता। भक्त की पुकार में वह शक्ति होती है कि वह अपने इष्ट को, भगवान को प्रकट कर लेता है।

स्वामी विवेकानंद जब ज्ञान प्रचार करने के लिए विदेश गये, तो जिस बिल्डिंग में वे रहते थे, वह बिल्डिंग तीन पीढ़ियों से एक ही परिवार की अमानत थी, लेकिन आज वह बिकने वाली है, उसको वहीं के ट्रस्ट वाले खरीद रहे हैं। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द का चश्मा और किताबें इत्यादि को संभाल कर रखा हुआ है। जहां-जहां स्वामी विवेकानंद ने जो-जो बातें कहीं, वे वैसी ही वहां पर लिखकर रखी हुई हैं। विदेशी लोग भी समझते हैं कि भारत देश ज्ञान का भण्डार है। भारत में ही भगवान का अवतार होता है और सद्गुरु के रूप में आकर वे आत्मज्ञान का प्रचार करते हैं। भारत के पास वह आत्मज्ञान है, जिस

ज्ञान से वह सारे विश्व को शान्ति दे सकता है। आज भी विदेशी लोग सन्तों की चीज को धरोहर के रूप में रखते हैं, वे उनकी वाणियों को बार-बार सुनते हैं और आत्मज्ञान को जानना चाहते हैं। जब वे ज्ञान को जान जाते हैं, तो उसे अपने जीवन में क्रियात्मक रूप दे देते हैं। इसलिये आप लोग भाग्यशाली हैं कि आपको ऐसे महान पुरुष के दर्शन-

सत्संग की इतनी महानता है कि वह मनुष्य को दानवता से मानवता की ओर ले जाता है। सत्संग मनुष्य को महामानव बना देता है। यदि मनुष्य के जीवन में सत्संग और सन्त नहीं आते, तो किसी भी काल में वह शान्त नहीं रह पाता।

प्रवचन सुनने का अवसर मिला है। श्री माता जी कितनी बार सुनाती थी कि इस गुरु दरबार में आत्मज्ञान की बात सुनाई ही नहीं जाती, बल्कि प्रेक्टिकल रूप से जनाई भी जाती है।

माता पार्वती जी ने भगवान के किस पावन नाम का सुमिरन किया होगा, जिसके कारण हम आज भी उनकी पूजा करते हैं। वह कौन-सा ऐसा नाम होगा, जिसको भगवान शंकर ने स्वयं जपा। इसलिए हे मनुष्य, अगर तुम भी अपने आपको जानना चाहते हो, विनाश से बचना चाहते हो, तो तुम्हें भी उस नाम का सुमिरन करना होगा, जिसका सुमिरण स्वयं भगवान शंकर ने किया। उस नाम के सुमिरन करने से ही हम बच सकते हैं। कलिकाल में प्रभु के पावन नाम का सुमिरन करने से ही हमारा कल्याण होगा। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

**कलियुग केवल नाम अधारा।
सुमिर-सुमिर नर उतरहिं पारा।।**

कलिकाल में केवल भगवान के नाम का ही सहारा है, जिसका सुमिरण करके मनुष्य मायारूपी भवसागर से पार उतर सकता है। भगवान का पावन नाम ही हमें इस भयंकर कलिकाल के प्रकोप से बचा सकता है। रामचरित मानस में कहा है-

राम एक तापस तिय तारी।

नाम कोटि खल कुमति सुधारी।।

भगवान राम ने तो एक तपस्वी की नारी अहिल्या का उद्धार किया, पर भगवान राम के पावन नाम ने तो करोड़ों लोगों की कुमतियों को सुधार दिया। भिलनी कई वर्ष तक भगवान राम के आने की प्रतीक्षा करती रही; क्योंकि उसके गुरु महाराज मतंग ऋषि ने वचन दिया था कि हे भिलनी! एक दिन तुझे भगवान राम के दर्शन जरूर होंगे। कई वर्ष तक वह भगवान राम के आने का इंतजार करती रही और एक दिन भगवान राम ने अपनी भक्त भिलनी को दर्शन दिये। भक्त हनुमान ने सेवा से भगवान राम को प्रसन्न कर लिया। हम सभी लोग भाग्यशाली हैं, जो ऐसे कलिकाल में हमें आत्मज्ञान प्राप्त हुआ। ऐसे समय में हमें भगवान के सच्चे नाम का सुमिरन करना चाहिए। कलिकाल में केवल भगवान के सच्चे नाम का सुमिरण आधार है।

पण्डाल में अधिकतर तो ज्ञानी भक्त ही हैं और जिनको उपदेश नहीं है। वे सोचते होंगे कि वह प्रभु का कौन-सा नाम है जिसके बारे में यहाँ सुनाया जा रहा है। एक नाम तो हमारे माता-पिता ने दिया; लेकिन नौ महीने तक माँ के गर्भ में हम जिस पावन नाम का सुमिरन करते हैं, वह नाम क्या है? जिसको भगवान राम और शिव ने स्वयं सुमिरन किया, जिस नाम को जनाने के लिये, हर युग में महापुरुष

आते हैं और कहते हैं- हे भक्त उसे जानो, उसे जानकर ही तुम्हारा कल्याण होगा। शास्त्र कहते हैं कि अपने को आप ही में पाओ। आज का गृहस्थ जीवन चिंताओं से घिरा हुआ है, कई माताएं हमारे पास आती हैं, कहती हैं कि माता जी! हम तो थोड़ी देर ही भजन-अभ्यास में बैठ पाती हैं और हमारा मन विचलित हो जाता है। हमें गृहस्थ की चिंताएं हैं। किसी को कमाने की चिंता है, किसी को पालन-पोषण की चिंता है, पर गृहस्थ में रहकर सेवा हम कर सकते हैं। हम जहां सेवा करेंगे, वहां स्वतः ही हमारा मन लगा रहेगा। गुरु दरबार के बारे में श्री माता जी कहते थे कि सेवा करने से कोई भी मेरा सेवक कंगाल नहीं हो सकता है, क्योंकि हम उस नाम की, सेवा की कमाई को कर रहे हैं, जो हमारे साथ जाती है। संसार का खजाना, धन के भण्डार सब यहीं धरे रह जायेंगे; बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें

यहीं पर रह जायेंगी, हमारे साथ सिर्फ सेवा की और नाम सुमिरन की कमाई ही जायेंगी, जो चीज हमारे साथ में जायेंगी, हम उसी में ध्यान दें, क्योंकि सांसारिक कामना तो कोई बड़ी बात नहीं।

हर घर में धन हो सकता है, पर भाग्यशाली भक्त वही है जो धन को सेवा में लगाता है। इसीलिये गुरुदरबार में सेवा पर जोर दिया जाता है। क्रिश्चियन सोसाइटीज हैं, विदेशों में एडवर्टाइजमेन्ट (विज्ञापन) किया जाता है कि एक पेप्सी (शीतल पेय) तुम पियोगे, तो तुम्हारे इतने रुपये लग जायेंगे; पर उसी से भारत में एक बालक का खर्चा चल जायेगा। वहाँ से भारत की गरीबी दिखाते हैं? जो पिछड़े क्षेत्र हमने भी यहाँ पर नहीं देखे होंगे, वे विदेशों में वीडियो के माध्यम से दिखाते हैं कि भारत में बहुत गरीब है,

भारत के लिये चन्दा दो। पर भारत का बड़ा सौभाग्य है, जो कि गरीबी में रहकर भी आत्मज्ञान को प्राप्त कर लिया। अगर भगवान आत्मज्ञान की कीमत लगाता, तो करोड़ों व्यक्ति उससे बंचित रह जाते। एक भगवान का नाम ही अमूल्य है, जिसका हम मूल्य नहीं चुका सकते। इस पण्डाल में गरीब-अमीर हर तरह का व्यक्ति बैठा है, जो एक दिन में सिर्फ छः रुपये कमाता है और उस प्रकार का व्यक्ति भी यहां है, जो रोज हजारों रुपये कमाता होगा, लेकिन

वह कौन-सा ऐसा नाम होगा, जिसको भगवान शंकर ने स्वयं जपा। इसलिए हे मनुष्य, अगर तुम भी अपने आपको जानना चाहते हो, विनाश से बचना चाहते हो, तो तुम्हें भी उस नाम का सुमिरन करना होगा, जिसका सुमिरण स्वयं भगवान शंकर ने किया। उस नाम के सुमिरन करने से ही हम बच सकते हैं।

इस समारोह के पण्डाल के नीचे सभी एक साथ बैठकर सत्संग का आनन्द ले रहे हैं। इसलिये गुरु महाराज जी की सेवा में हम अपना मन लगायें और सेवा से हम लोग अपने आपको भवसागर से तारें। भजन सुमिरन करें, क्योंकि अगर भजन नहीं किया, तो मनुष्य का संसार में जीना व्यर्थ है। इसीलिये समय-समय पर सच्चे सन्त आत्मज्ञान देने आते हैं। कहा कि-

कबीरा खड़ा बाजार में,

मांगे सबकी खैर।

ना काहू से दोस्ती

ना कोहू से बैर॥

यहाँ महापुरुष के सामने तो सन्त महात्मा बैठे हैं, ये जिस बात का जिक्र करते हैं, इनकी बातें हमें माननी चाहिये; इनकी बात को मानने में भक्त का कल्याण है। गुरु महाराज जी की कृपा

से जो आत्मा ज्ञान का फूल होता है, पर उसके ऊपर भौरा नहीं बैठता, क्योंकि भौरा चलायमान होता है। एक जगह उसकी स्थिति स्थिर नहीं रहती है। चम्पा के फूल को जब एक ऋषि देखते हैं, तो कहते हैं कि-

चम्पा तुझमें तीन गुण,

रूप रंग और वास।

अवगुण तुझमें कौन सा,

जो भौरा न आवे पास॥

चम्पा कहती है- महात्मन्! वाकई मुझमें तीनों गुण हैं। रूप, रंग और वास, जगह-जगह के मीत को कौन बिठाये पास।। प्रेमी सज्जनों। अगर मन को हम चलायमान रखेंगे, तो हमारे ऊपर गुरु महाराज जी की कृपा नहीं होगी। इसलिये जब हम ज्ञानी बन चुके हैं, तो हमें भजन जरूर करना चाहिये।

आज भी चार सौ लोगों को आत्मज्ञान का क्रियात्मक बोध हुआ। असल में आज ही उनका जन्म हुआ, क्योंकि पहले जन्म तो उसका माता के गर्भ से हुआ। नामकरण हो गया होगा, पर आज उनका असली जन्म हुआ, आज उनका जन्म सफल हो गया। सचमुच में उन्हें भक्ति में सफलता नहीं मिलती, जो बाहरी कर्म काण्ड में लगे रहते हैं, कहा-

माला तो कर में फिरे,

जीभ फिरे मुख माहिं।

मनुवां तो दसों दिस फिरे,

यह तो सुमिरन नाहिं।

अपने मन में स्थिरता लाओ और अपने मन को भक्ति मार्ग में लगाओ! सेवा-भक्ति की कमाई ही हमारे साथ जानी है, गुरु दरबार से जो भी सेवा मिलती है, तन-मन धन लगाकर उसमें अपना मन लगाओ और अपने जीवन को धन्य बनाओ।

GREAT TEACHERS ARE RECOGNIZED THROUGH THEIR TEACHINGS

MATA SHRI MANGLA JI

Dear Premies, Man today is constantly engaged in developing means for his physical well-being and for his bodily needs & pleasures. First, he constructs a house. Then, he arranges for good furniture and matching drapes. He spends his entire life in such pursuits but doesn't make any endeavors to discover his inner (spiritual) treasures.

Lord Rama left Ayodhya to live in the jungle for 14 years. He saw many Rishis & Munis doing their spiritual practices. They were often disturbed and tormented by others with evil tendencies (Rakshasas). Upon reaching the ashram of Agastya Muni, Lord Rama was quite impressed with its serenity and peace. He told Laxmana, that such a spiritual adobe is indeed superior to even the royal palace of Ayodhya! Sutikshan Muni tells Lord Rama that he had been worshipping the Holy Name for years and was eager to meet Rama. Lord Rama replies that the purpose behind his own birth was to protect Rishis and Munis. Such (spiritual) purpose alone is the key difference between the life of the ordinary and that of great men.

Great teachers talk about unity or oneness in diverse forms. They guide us to get Guru Maharaj Ji's darshan (blessings), to listen to spiritual discourses (satsang) and to return to our homes with an inspiration and will to do good. Great teachers are recognized only by true disciples, who gain immensely from their inner experiences. In this Kaliyuga, our ashram offers great peace and protection. It is a miracle that you all are sitting here with love and compassion and attending to this spiritual discourse.

Shri Mata Ji used to say that great spiritual teachers are in their family. As materialism and sin is rampant in Kaliyuga, the preachings of such great souls are of immense use to all. In Treta Yuga, Lord Rama had to face a lot of difficulties and hardships. In Dwapar Yuga, Lord Krishna protected his disciples from injustice and tortures at the hand of evil doers.

The knowledge given by



Guru Maharaj Ji is like a precious pearl that never loses its shine. A fake pearl loses its shine if kept in water for a few days. As the disciple puts this knowledge in proper practice, his spiritual treasure grows by the day. This treasure is the Holy Name of God within us. As a person develops deeper spiritual realizations, his soul continually progresses and he doesn't get entangled in materialism or other worldly matters. To understand and realize this spiritual knowledge, one needs to be pure hearted.

We spend our entire life does daily work chores, and don't find time to practice

the knowledge of God. We always defer it to tomorrow. The Saints say, "It's better to do good things today, rather than postponing them to tomorrow".

Once a disciple prays to God that let your divine wishes guide the purpose of my life. Let my thoughts be aligned to providence. God tells him that if everyone thinks like him, then there would be peace on earth. God responds that all those disciples who remember Him, would be blessed.

In the evening fireflies think that they alight the earth. However, when stars sparkle in the sky, the light of fireflies gets faded. Stars may think that they provide the light to the world. But, as the moon lights up the sky, the pride of the stars also goes away. In turn the moon thinks that it is the source of light. But when the sun rises in the morning, the light of the moon also disappears! Similarly, people who gather worldly knowledge and education may develop unwanted pride. It is important to remember that spiritual knowledge is not a matter of discussion or debate, it is the way of achieving everlasting peace and happiness.

Guru Ji's ashram is like a

deep sea, where each disciple gets blessings according to their capacity. This sea neither dries up! We are indeed lucky that in this Kaliyuga, we have the guidance and support of our teacher to aid our progress on the spiritual path. Without this inner light, life is certainly in the dark. One day when the soul leaves the body, it is declared dead and turns to dust.

In Egypt, a special herbal paste was used to preserve dead bodies in pyramids. These are called mummies. Upon digging, the archeologists found that these bodies were well preserved; the organs and even the hair and teeth were intact. But in spite of this, the Mummy is devoid of life force and as such nothing more than dust.

By God's grace, one attains human form to gather the knowledge of God and practice spiritual teachings. Holy Saints say:

After going through eighty four lakhs life forms, one gets human birth, let us remember the Holy Name as the final day is nearing.

We do not appreciate the importance of this human birth and waste it in availing the worldly pleasures and materialistic things.

Small kids get highly influ-

enced by TV serials. Recently an eleven year old child stole a gun, called all his fellow students and the teacher to the class room, then closed the door inside and started shooting. Later he revealed that he had seen similar violence on television.

We need to guide our kids on the right path from the childhood itself, lest they take the wrong path and become evil doers (or monsters). Karma, or the actions performed is the distinction between a noble person and an evil one. Parents should take their kids to spiritual programs and discourses. They should discuss spiritual subjects at home so that the kids understand and develop good qualities.

A gardener often gives a wooden support to his plants. Later these plants grow to become great trees. The Prahlada and Dhruva were young disciples who attained God at an early age.

Spiritual festivals like Navratri for Goddess Durga, Ramnavmi or Janmashtami remind us of the inspiring lives and charitable deeds of great teachers. In spite of regular celebrations of these festivals, there is a lack of peace. So we should constantly remember the Holy Name.

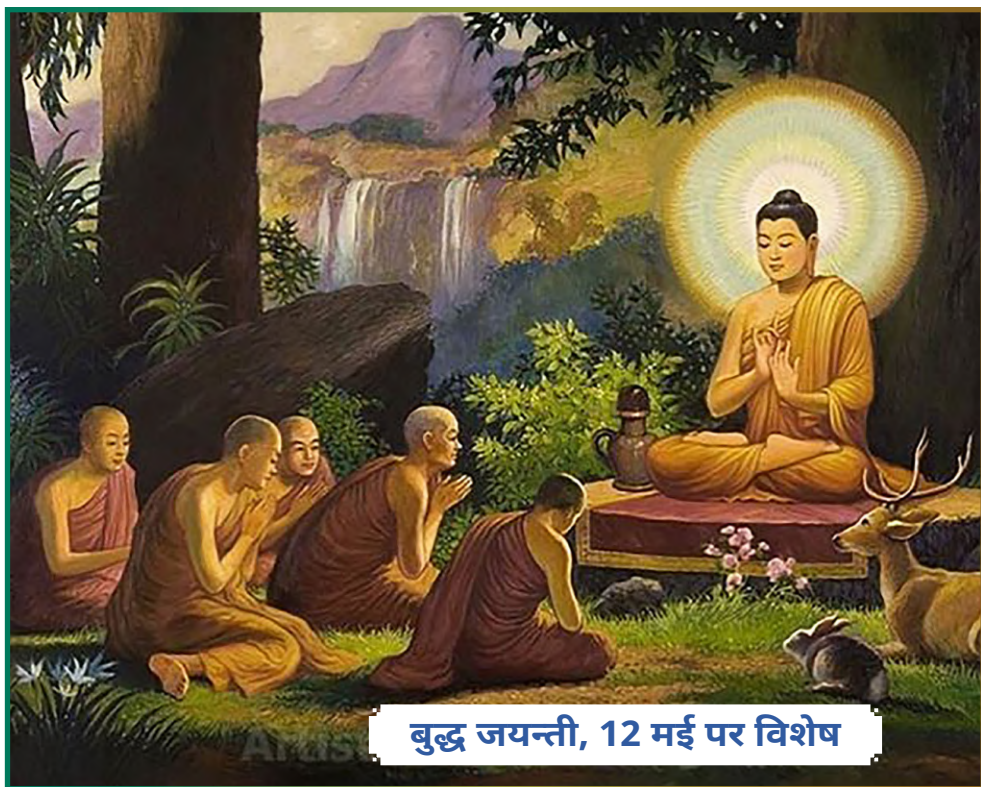
भगवान बुद्ध का संदेश दुःखों से त्राण दिलाता है निर्वाण

जन्मत-मरत दुःसह दुःख होई।

जीव अनादि पाव दुःख सोई।

कहते हुए मानस में इंगित करते हुए स्पष्ट किया गया है कि इससे छुटकारा पाना ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है। इससे सदियों पहले अवतरित होने वाले भगवान बुद्ध ने अपने समसामयिक लोगों को भी यही बताया था कि इस संसार में दुःख है, दुःख का कारण है, दुःख से त्राण पाने का मार्ग है और उस मार्ग को अपनाकर ही निर्वाण यानी दुःखों से छुटकारा पाया जा सकता है। भगवान बुद्ध, जिन्हें गौतम बुद्ध के नाम से भी जाना जाता है, न केवल समय के महापुरुष थे, बल्कि वे आध्यात्मिक चेतना के आलोक में मानवता को सत्य, अहिंसा और करुणा का मार्ग दिखाने वाले महान मार्गदर्शक भी थे। उनका जीवन एक साधारण राजकुमार से एक तपस्वी और फिर एक बोध प्राप्त चैतन्य बुद्ध तक की यात्रा का उदाहरण है, जिसने समस्त मानव जाति को दुःखों से मुक्त होने का मार्ग दिखाकर जीते-जी निर्वाण प्राप्त करने का व्यावहारिक उपदेश अपने समसामयिक लोगों को प्रदान किया। आज जब संपूर्ण विश्व अनेकानेक महायुद्धों से आक्रांत होकर आतंकवादियों की हिंसा से त्रस्त होकर कराह रहा है, संपूर्ण मानव समाज अशांति और संघर्षों से घिरा हुआ है, तब बुद्ध का मध्यम मार्ग और उनके द्वारा बताए गए चार आर्य सत्य, आज पहले से भी अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। उनका संदेश न केवल आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है, बल्कि समाज में शांति, सह-अस्तित्व और करुणा का भी आदर्श स्थापित करता है।

उनका अवतरण 563 ईसा पूर्व लुंबिनी (नेपाल) में हुआ था। उनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। वे शाक्य वंश के राजा शुद्धोधन और माता महामाया के पुत्र थे। इनके जन्म के बाद एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की थी कि यह बालक या तो एक महान सम्राट बनेगा या फिर संसार को मुक्ति का मार्ग दिखाने वाला एक संन्यासी होगा। राजा ने अपने पुत्र सिद्धार्थ को सुख-सुविधाओं से भरपूर एक ऐसे वातावरण से घिरा हुआ रखा, ताकि उनको कभी भी संसार के दुःखों को देखने का मौका ही न मिले। लेकिन जब उन्होंने पहली बार जीवन के चार प्रमुख सत्य- जरा (बुढ़ापा), व्याधि (रोग), मृत्यु और एक संन्यासी को देखा, तो वे इस विचार में पड़ गए



बुद्ध जयन्ती, 12 मई पर विशेष

कि जीवन केवल भोग-विलास तक सीमित नहीं हो सकता। इसलिए 29 वर्ष की उम्र में वे अपनी पत्नी यशोधरा और नवजात पुत्र राहुल को छोड़कर सत्य की खोज में निकल पड़े। वर्षों की तपस्या के बाद बोधगया में पीपल के वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई और वे बुद्ध यानी बोध प्राप्त चैतन्य

व्यक्ति कहलाए। उन्होंने घोषित किया कि उन्हें दुःखों से मुक्ति का मार्ग मिल गया है, जीवन के चार आर्य सत्तों का पता चल गया है। उन्होंने अपने अनुयायियों को दिए गए प्रथम उपदेश में चार आर्य सत्य की शिक्षा दी, जो संसार के समस्त दुःखों से मुक्ति का मार्ग बताते हैं। वे आर्य सत्य निम्नलिखित हैं- 1. दुःख : संसार में दुःख अपरिहार्य है। जन्म, मृत्यु, बीमारी, वियोग आदि सभी जीवन के दुःख हैं। 2. दुःख समुदय : इन दुःखों का कारण तृष्णा (इच्छा) और अविद्या (अज्ञान) है। 3. दुःख निरोध : इच्छाओं के त्याग से दुःखों का अंत संभव है। इसे निर्वाण कहा जाता है। 4. दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा : इस मुक्ति को प्राप्त करने का मार्ग अष्टांगिक मार्ग है।

भगवान बुद्ध ने अपने स्वयं के अनुभव के आधार पर अपने समसामयिक लोगों को समझाया कि हम सब चाहें, तो अपने जीवन को दो अति वाली स्थितियों में व्यतीत कर सकते हैं। एक ओर अतिशय कठोर तपस्या वाला मार्ग है और दूसरी ओर अतिशय भोग-विलास वाला मार्ग। लेकिन उन्होंने अपने अनुयायियों को भोग का त्याग करके मध्यम मार्ग अपनाने का उपदेश दिया। यह मार्ग न तो संसार से पूरी तरह विरक्ति सिखाता है और न ही भौतिक सुखों में लिप्त होने की अनुमति देता है। उन्होंने अपने अनुयायियों को संसार में पहले दुःखों के महाजाल से छुटकारा पाने का जो मार्ग बतलाया, उसे अष्टांगिक मार्ग के नाम से संबोधित किया जाता है। वह आठ अंगों वाला मार्ग इस प्रकार है- 1. सम्यक दृष्टि यानी सही ज्ञान और यथार्थ को समझना। 2. सम्यक संकल्प यानी अहिंसा, करुणा और त्याग का भाव रखना। 3. सम्यक वचन यानी सत्य बोलना, मधुर और हितकारी वाणी अपनाना। 4. सम्यक कर्म यानी नैतिकता का पालन करना, हिंसा और बुरे कर्मों से दूर रहना। 5. सम्यक आजीविका यानी सही साधनों से जीवन यापन करना। 6. सम्यक प्रयास यानी बुरे विचारों का त्याग और अच्छे विचारों का संवर्धन। 7. सम्यक स्मृति यानी प्रत्येक क्षण में सजग और जागरूक रहना। 8. सम्यक समाधि यानी ध्यान और आत्मचिंतन द्वारा चित्त को स्थिर करना। आज पूरी दुनिया परमाणु हथियारों की होड़ में संलग्न है। छोटी-छोटी बातों पर होने वाले संघर्ष विश्व युद्ध का विकराल रूप धारण कर लेंगे, यह आसानी से बतलाया नहीं जा सकता। आज का विश्व हिंसा, युद्ध, आतंकवाद, लालच

और स्वार्थ की आग में जल रहा है। मानवता पीड़ा और तनाव से कर रही है। इसलिए बुद्ध के अहिंसा, करुणा और संतुलन के संदेश की प्रासंगिकता पहले से भी कहीं अधिक बढ़ गई है।

1. युद्ध और संघर्षों की समाप्ति : बुद्ध का मध्यम मार्ग और अष्टांगिक मार्ग हमें यह सिखाता है कि संतुलित दृष्टिकोण और अहिंसा ही वास्तविक समाधान है। यदि विश्व समुदाय बुद्ध की करुणा और अहिंसा की नीति को अपनाए, तो वैश्विक संघर्षों को समाप्त किया जा सकता है।

2. अहिंसा और करुणा का महत्व : बुद्ध ने स्पष्ट रूप से कहा कि क्रोध को क्रोध से नहीं, बल्कि प्रेम से जीता जा सकता है। आज जब समाज में असहिष्णुता बढ़ रही है, तब बुद्ध की शिक्षा हमें सहिष्णुता और शांति की ओर ले जा सकती है।

3. भौतिकवाद से मुक्ति : आज का मानव अधिक से अधिक धन और सुख-सुविधाओं की लालसा में दुःखी हो रहा है। बुद्ध का संदेश हमें सिखाता है कि सुख बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि आंतरिक संतोष में निहित है।

4. मानसिक शांति और ध्यान : बुद्ध के ध्यान और समाधि के सिद्धांत तनाव, अवसाद और मानसिक अशांति से मुक्ति के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। वर्तमान समय में योग और ध्यान का बढ़ता चलन बुद्ध की शिक्षाओं की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है। भगवान बुद्ध के उपदेश केवल किसी विशेष काल या स्थान तक सीमित नहीं हैं, वे सार्वभौमिक हैं; और हर युग में प्रासंगिक रहेंगे। उन्होंने मानव जाति को दुःखों से मुक्ति और आत्मज्ञान प्राप्त करने का मार्ग भी दिखाया। उनका निर्वाण वाला सिद्धांत न केवल मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग है, बल्कि मानसिक और सामाजिक शांति का भी आधार है। आज जब पूरा विश्व शांति की खोज में भटक रहा है, तब बुद्ध के सिद्धांत हमें दिखाते हैं कि असली शांति बाहरी नहीं, बल्कि हमारे भीतर है। यदि मानवता उनके संदेश को अपनाए, तो निश्चित ही यह संसार एक शांतिपूर्ण और समरस समाज में परिवर्तित हो सकता है। इतना ही नहीं भगवान बुद्ध ने अपने अनुयायियों को स्पष्ट रूप से समझाया कि अपने मन को अतीत और भविष्य के बीच में पेंडुलम की तरह झुलाने से कोई लाभ नहीं मिलने वाला। कहा भी है- **‘न अतितेन सोचेत, न पज्जुप्पन्नेन’** यानी अतीत पर शोक मत करो, भविष्य की चिंता मत करो, वर्तमान में ही जागरूक बनो। यही बुद्ध का शाश्वत संदेश है, जो हमें दुःखों से मुक्त कर निर्वाण की ओर ले जाता है। ■

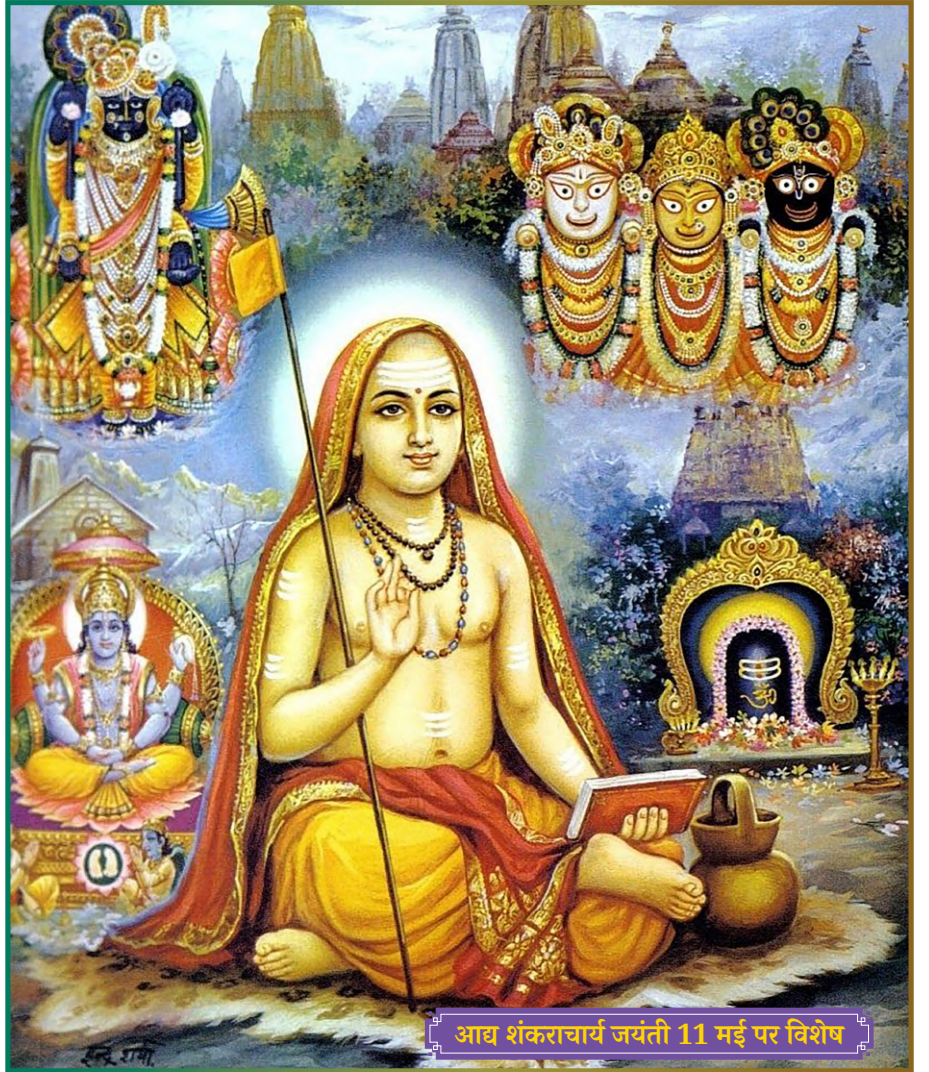
आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक एकता के ध्वजवाहक आद्य शंकराचार्य

आधुनिक युग में सत्य सनातन धर्म के ध्वजवाहक मनीषी आद्य शंकराचार्य जी का नाम कौन नहीं जानता है। सच कहिए तो भारत की वैदिक संस्कृति जब युग प्रभाव से दूषित हो अपने पुरातन मार्ग से भटक गई थी, तब उसको पुनर्जीवित करने वाले महान दार्शनिक और सनातन धर्म के पुनरुद्धारक आद्य शंकराचार्य का जन्म 788

ईस्वी में केरल राज्य के कालड़ी नामक ग्राम में एक नंबूदरी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता शिवगुरु और माता आर्यम्बा परम शिव भक्त थे और उन्होंने घोर तपस्या के बाद संतान रूप में शंकराचार्य को प्राप्त किया था। कहते हैं कि जन्म के कुछ ही वर्षों बाद शंकर ने असाधारण प्रतिभा का परिचय देना प्रारंभ कर दिया था। वे बहुत कम उम्र में ही संपूर्ण वेदों, उपनिषदों और अन्य शास्त्रों में पारंगत हो गए। मात्र 8 वर्ष की अवस्था में उन्होंने संन्यास ग्रहण करने का निश्चय किया और माता की आज्ञा से घर त्यागकर आध्यात्मिक यात्रा पर निकल पड़े। वे नर्मदा तट पर स्थित ओंकारेश्वर पहुंचे, जहां उन्होंने गुरु गोविंद भगवत्पाद से अद्वैत वेदांत का आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने अद्वैत वेदांत का प्रचार किया, जिसके अनुसार यह सारा ब्रह्मांड एक ही परमतत्त्व ब्रह्म से उत्पन्न हुआ है और ब्रह्म ही एकमात्र सत्य

है। उन्होंने **“ब्रह्म सत्यम् जगन्मिथ्या”** का सिद्धांत प्रतिपादित किया, जिसका अर्थ है कि ब्रह्म ही वास्तविक सत्य है और यह सारा संसार मात्र माया है। उन्होंने यह भी कहा कि आत्मा और परमात्मा में कोई भेद नहीं है- दोनों एक ही हैं, बस अज्ञान (अविद्या) के कारण मनुष्य

स्वयं को सीमित शरीर मात्र मान बैठा है। उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं- ब्रह्मसूत्र भाष्य, भगवद्गीता भाष्य, उपनिषद भाष्य, विवेक चूड़ामणि, भज गोविन्दम् उक्त ग्रंथों में उन्होंने वेदों, उपनिषदों और गीता के गूढ़ रहस्यों को बोधगम्य भाषा में प्रस्तुत किया ताकि आम जनमानस भी आध्यात्मिक ज्ञान को समझ सके। जब उनका अवतरण



आद्य शंकराचार्य जयंती 11 मई पर विशेष

हुआ, उस समय भारत में चारों तरफ अज्ञान, अंधविश्वास और पाखंड का बोलबाला था। वैदिक धर्म में कर्मकांडों की अधिकता के कारण जनमानस वास्तविक आध्यात्मिक ज्ञान से दूर हो गया था। ऐसे में उन्होंने संपूर्ण भारत का भ्रमण कर विभिन्न मतों का खंडन करते हुए सनातन धर्म

की मूल भावना को पुनर्स्थापित करते हुए चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की, जो आज भी हिंदू धर्म के आध्यात्मिक केंद्र बने हुए हैं। उन्होंने उत्तर में ज्योतिर्मठ-बद्रीनाथ, पश्चिम में शारदा मठ-द्वारका, पूर्व में गोवर्धन मठ-पुरी और दक्षिण में शृंगेरी मठ-कर्नाटक में स्थापित किया। इन मठों के माध्यम से उन्होंने पूरे देश को आध्यात्मिक एकता के सूत्र में बांध दिया। उनका उद्देश्य केवल धार्मिक सुधार तक सीमित नहीं था, बल्कि वे सामाजिक सुधारों पर भी बल देते थे। उन्होंने मूर्ति पूजा, संप्रदायवाद और जातिवाद के दोषों को दूर करने का प्रयास किया और सभी को आत्मज्ञान के पथ पर चलने के लिए प्रेरित किया। आज के युग में, जब समाज में भौतिकवाद और नैतिक पतन बढ़ रहा है, जब धर्म को केवल बाह्यचार तक सीमित किया जा रहा है, तब उनके विचार पहले से भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं।

आद्य गुरु शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत हमें सिखाता है कि आत्मबोध और आत्मचिंतन के बिना जीवन अधूरा है। उन्होंने बताया कि ईश्वर बाहर नहीं, बल्कि स्वयं के भीतर ही स्थित है। उन्होंने पूरे भारत को एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धागे में पिरोया, जो आज भी आवश्यक है। इतना ही नहीं, उन्होंने अंधविश्वास और बिना तर्क के किसी भी परंपरा को स्वीकार करने की प्रवृत्ति का भी विरोध किया। आज भी हमें यही दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है। आदि शंकराचार्य केवल अतीत के एक महान दार्शनिक ही नहीं हैं, बल्कि उनके विचार और शिक्षाएँ आज भी उतनी ही प्रभावी हैं जितनी 1200 वर्ष पहले थीं। उन्होंने भारत की आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत किया और पूरे देश में धर्म और दर्शन को तर्कसंगत और वैज्ञानिक आधार भी प्रदान किया। आज के इस अति आधुनिकतावादी सोच से प्रभावित मानसिकता जब संप्रदायवाद, भौतिकता और नैतिक मूल्यों का पतन का प्रचार-प्रसार बढ़ गया है, तब शंकराचार्य की शिक्षाएँ हमें आध्यात्मिकता, एकता और आत्मबोध के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं। उनका जीवन और कृतित्व समस्त मानवता के लिए अमूल्य धरोहर है, जिसे हमें अपनाकर अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। उनके द्वारा रचित यह भजन अनंत काल तक अपना मानव तन सार्थक करने की इच्छा वाले लोगों का मार्ग दर्शन करता रहेगा।

**दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुच्यत्याशावायुः॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते ।
प्राप्ते संनिहिते मरणे नहि नहि रक्षति दुकृञ् करणे ॥**

अर्थात् दिन और रात, सायंकाल और प्रातःकाल, शिशिर और वसन्त ऋतु बार-बार आती हैं; इस प्रकार काल की लीला होती रहती है और आयु बीत जाती है, किंतु आशा रूपी वायु छोड़ती ही नहीं। अतः निरन्तर गोविन्द को ही भज, क्योंकि मृत्यु के समीप आने पर 'दुकृञ् करणे' यह रटना रक्षा नहीं कर सकेगी। (व्याकरण में 'दुकृञ् करणे' एक धातु है। एक वृद्ध ब्राह्मण को इसे रटते देखकर श्री शंकराचार्य जी ने यह उपदेश किया था।

**अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः।
करतलभिक्षा तरुतलवासस्तदपि न मुच्यत्याशापाशः॥**

दिन में आगे अग्नि और पीछे सूर्य से शरीर तपाते हैं, रात्रि में घुटनों में ठोड़ी दबाये पड़े रहते हैं, हाथ में ही भिक्षा मांग लाते हैं, वृक्ष के नीचे ही पड़े रहते हैं; फिर भी आशा का जाल जकड़े ही रहता है।

यावद्वित्तोपार्जनसक्तस्तावन्निजपरिवारो रक्तः।

पश्चाद्भावति जर्जरदेहे वार्ता पृच्छति कोऽपि न गेहे॥

अरे! जब तक तू धन कमाने में लगा हुआ है, तभी तक तेरा परिवार तुझसे प्रेम करता है। जब जराग्रस्त (वृद्ध) होगा, तो घर में कोई बात भी न पूछेगा।

अंगं गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम्।

वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुच्यत्याशा पिण्डम्॥

शरीर के अंग गल गए, सिर के बाल पक गए, मुख में दांत नहीं रहे, बूढ़ा हो गया, लाठी लेकर चलने लगा, फिर भी आशा पिण्ड नहीं छोड़ती है।

बालास्तावत्क्रीडासक्तस्तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः।

वृद्धस्तावच्चिन्तामग्नः पारे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः॥

बालक तो खेलकूद में आसक्त रहता है, जवान स्त्री में आसक्त है और वृद्ध भी अनेक प्रकार की चिंताओं में मग्न रहता है। परमात्मा में कोई संलग्न नहीं रहता। भगवान आद्यशंकराचार्य का यह उपदेश हर एक मानव के लिए अनुकरणीय और आत्मकल्याणकारी है, इसे जीवन में आत्मसात करने पर अवश्यमेव आत्मकल्याण संभव है। ऐसे महान और अद्वितीय महापुरुष श्री शंकराचार्य जी को उनकी जन्म जयंती पर शत-शत नमन करते हैं। ■

इंसान ही ना बन पाए तो फिर क्या बन पाओगे

मानवसभ्यता जितनी पुरानी है, उतनी ही पुरानी मानवता की महत्ता भी है। आरंभिक काल से ही ऋषि-मुनि, संत, महापुरुष आदि मानवता के महत्व को रेखांकित करते रहे हैं। अलग-अलग धर्मों में भी मानवता की आवश्यकता ही प्रतिपादित की गई है। इसका कारण यह है कि असल में मानवता ही मानव होने की पहचान है। जब दो लोग आपस में झगड़ा करते हैं, तो एक-दूसरे को कहते हैं- इंसान बन जा। हालांकि शारीरिक रूप से तो दोनों ही इंसान होते हैं। इसका कारण यह है कि झगड़ा करते वक्त शारीरिक रूप से इंसान होने पर भी वे आचरण में इंसान नहीं होते। यह तो आम लोगों की प्रतिक्रिया है। लेकिन विशेष लोगों की प्रतिक्रिया भी कुछ अलग नहीं होती। वेदों तक में कहा गया है कि 'मनुर्भव' मनुष्य बनो। तो कौन से वे गुण हैं, जिनसे युक्त होने पर मानव को मानव समझा जाता है? ये गुण हैं, सहजता, सरलता, सादगी और स्वीकार्यता।

मानव जब इस धरा पर नवजात शिशु के रूप में आता है, तो प्राकृतिक रूप से ही उसमें ये गुण विद्यमान रहते हैं। वह सहज, सरल, सादगीयुक्त और सबको स्वीकार करने वाला होता है। उसका किसी से कोई भी संघर्ष नहीं होता, उसमें कोई अहंकार नहीं होता। जो भी उसे प्रेम से गोद में उठा लेता है, वह उसी की गोद में चला जाता है। जो सामने प्यार से मुस्कराया, वह भी मुस्करा दिया। न जाति का संघर्ष, न पराएपन का भाव। वह सबका, सब उसके। सहजता यही है- जो जैसा है, उसे वैसा ही स्वीकार कर लेना। अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश- जो जैसा है, वह वैसा ही है। इन सबका अपना अस्तित्व है। आप उसे स्वीकार करें या ना करें, उन पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। लेकिन पाँचों तत्व सबके अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। अग्नि जलाने में किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं करती। जल सबको स्वीकार करता है। जो भी उसके संपर्क में आता है, उसे शीतलता

प्रदान करता है। वायु चाहे फलदार वृक्ष की शाखा हो अथवा कंटीली झाड़ी की टहनी, दोनों पर समान प्रभाव डालती है। आकाश की विराट सत्ता भी सबको समान रूप से अपने भीतर समाहित करती है। जीव तो हर जीवधारी में है।

रामचरित मानस में कहा गया है, **‘ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुखरासी।’** जो सहज है, वही हर भौगोलिक स्थिति में जीवित रह पाता है, अन्यथा नष्ट हो जाता है। मानवता का चौथा और अंतिम गुण है, स्वीकार्यता। शाखाएं हवा का अस्तित्व स्वीकार करती हैं, उसके वेग के अनुसार झुक जाती हैं। जो सबको स्वीकार करता है, उसे भी



सब स्वीकार करते हैं। चूँकि सहजता, सरलता, सादगी और स्वीकार्यता मानव के प्राकृतिक गुण हैं, इसलिए बचपन में वे गुण सुरक्षित रहते हैं। परंतु जैसे-जैसे आयु बढ़ती है, वह अपने इन मूल गुणों से दूर हटता चला जाता है। सहजता का स्थान आडंबर ले लेता है। उसे लगता है कि एकमात्र वही सही है, बाकी सब गलत हैं। वह किसी को उतनी ही अवधि तक स्वीकार करता है, जब तक कि उसे उसकी जरूरत होती है। आवश्यकता समाप्त, स्वीकार्यता समाप्त। इसी वजह से उसका जीवन तनावों से भर गया है। न वह व्यक्ति जीवन में सही रह पाया और न ही लौकिक जीवन में एक अच्छा इंसान बन पाया। अतः शास्त्रों की मनुष्य जाति को सबसे पहली शिक्षा है-मनुष्य बनो। धनवान, बलवान, विद्वान, चाहे जो बनें, परंतु सबके पहले हम मनुष्य बनें, इसी में संसार की स्थायी शांति का मर्म छिपा हुआ है। ■

भारत में बन्दरों को पकड़ने की एक विचित्र विधि है। भूमि में एक तंग मुँह वाला बर्तन (सुराही) गाड़ देते हैं और उसमें मूँगफली, चने, मटर इत्यादि वस्तुएं डाल देते हैं, जिन्हें बन्दर खाना पसन्द करते हैं। बन्दर आकर बर्तन में अपने दोनों हाथ डाल देते हैं और मुट्ठी में मूँगफली, चने इत्यादि भर लेते हैं। मुट्ठी भर जाने पर बड़ी हो जाती है। बन्दर जब अपने हाथ बाहर निकालना चाहता है, तो मुट्ठी बाहर नहीं निकल पाती। बन्दर लालच में अपनी मुट्ठी को खोलना नहीं चाहता। इस प्रकार वह फंस जाता है और पकड़ लिया जाता है। सचमुच ही यह विधि कितनी विचित्र और अनोखी है।

अब प्रश्न यह उठता है कि कौन-सी वस्तु सर्वप्रथम बन्धन का कारण बनती है? हम स्वयं ही अपनी दासता और अपने बन्धन के कारण बनते हैं। इतना बड़ा संसार है जो एक विशाल जंगल के समान है। इसमें तंग मुँह वाले बर्तन के समान हमारा अपना मस्तिष्क मन है। प्रलोभनस्वरूप यहाँ मूँगफली इत्यादि हैं। लोग इन प्रलोभनों में फंस जाते हैं। मस्तिष्क द्वारा या उसके माध्यम से जो कुछ भी किया जाता है, उसे मनुष्य अपना मानता है। हरएक अपने आपको अपने मस्तिष्क से आत्मसात कर लेता है। वह इस तंग मुँह वाले बर्तन अर्थात् मस्तिष्क में रखे हुए प्रलोभनरूपी मूँगफली इत्यादि को मजबूती से अपनी मुट्ठी में पकड़ लेता है।

यही कारण है जिससे हम चिन्ताओं, भय, प्रलोभनों और तरह-तरह की व्याधियों के दास बन जाते हैं, यही हमारा बन्धन है। संसार के सभी दुःखों का यही कारण है। यदि हमें मुक्ति पाने की अभिलाषा है, तो हमको अपनी मुट्ठी खोलनी पड़ेगी अर्थात् प्रलोभनों को छोड़ना पड़ेगा। सारा संसाररूपी जंगल हमारे सामने

पड़ा है। हम एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद सकते हैं और जंगल भर के मेवे और फल खा सकते हैं; सभी हमारे लिए ही हैं। सारा संसार हमारे लिए ही है। केवल इस स्वार्थपूर्ण अज्ञान और माया से हमें अपने आपको छुड़ाना है। इसके बाद हम स्वतंत्र हो जायेंगे और अपने रक्षक स्वयं हो जायेंगे। अपने को मस्तिष्क मन से आत्मसात करना ही दासत्व या बन्धन का कारण है। उससे छूट जाने पर हम स्वतंत्र हो जाते हैं। ■

बन्धन का कारण

मई, 2025 के पर्व-त्योहार

□ 1 मई गुरुवार- श्रमिक दिवस □ 6 मई मंगलवार- सीता नवमी □ 11 मई रविवार- नरसिंह जयंती/आद्य शंकराचार्य जयंती □ 12 मई सोमवार- बुद्ध पूर्णिमा/ बैशाख पूर्णिमा □ 13 मई मंगलवार- नारद जयंती

हमारे प्रभु, औगुन चित न धरौ

हमारे प्रभु, औगुन चित न धरौ।
समदरसी है नाम तुम्हारौ, सोई पार करौ॥
हमारे प्रभु, औगुन चित न धरौ॥ टेक॥
इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परौ।
सो दुबिधा पारस नहिं जानत, कंचन करत खरौ॥
हमारे प्रभु, औगुन चित न धरौ॥ 1॥
इक नदिया इक नार कहावत, मैलौ नीर भरौ।
जब मिलि गए तब एक बरन है, गंगा नाम परौ॥
हमारे प्रभु, औगुन चित न धरौ॥ 2॥
तन माया, ज्यौ ब्रह्म कहावत, सूर सु मिलि बिगरौ।
कै इनकौ निरधार कीजियै, कै प्रन जात तरौ॥
हमारे प्रभु, औगुन चित न धरौ॥ 3॥

हेटौंडा, नेपाल में परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी ने किया नवनिर्मित आश्रम का उद्घाटन तथा संपन्न हुआ विशाल सत्संग समारोह

हेटौंडा, नेपाल। भगवान पशुपति नाथ की पवित्र भूमि नेपाल राज्य के हेटौंडा नगर में एक भव्य और विशाल सत्संग समारोह आयोजित किया गया। हेटौंडा पहुँचने पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज, माताश्री मंगला जी एवं श्री सांख्य जी महाराज के करकमलों द्वारा वहाँ से दिव्य विभूतियों का स्वागत कर भजन-कीर्तन गाते और जय-जयकार करते हुए प्रेमीभक्त धीरे-धीरे आश्रम की ओर बढ़ते हुए नवनिर्मित आश्रम द्वार पर



हेटौंडा, नेपाल के टी.सी.एन. मैदान में विशाल सत्संग समारोह को सम्बोधित करते हुए माताश्री मंगला जी एवं मंच पर विराजमान परमपूज्य श्री भोले जी महाराज

गया। परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के सानिध्य में 22 मार्च, 2025 को विशाल सत्संग समारोह श्री हंसलोक जनकल्याण समिति नेपाल के सौजन्य से आयोजित किया गया। इससे पूर्व 21 मार्च को हेटौंडा के वार्ड नं.-3, लेवट आश्रम टोल में अवस्थित नवनिर्मित दो मंजिला आश्रम भवन का वैदिक मंत्रों के साथ गणपति एवं शिवगौरी पूजन के बाद

श्री भोले जी महाराज, माताश्री मंगला जी एवं श्री सांख्य जी का स्थानीय गणमान्यजनों, प्रेमीभक्तों तथा संस्था के पदाधिकारियों ने भव्य स्वागत किया। आश्रम भवन से एक किमी दूर मुख्य मार्ग पर पत्र, पुष्पों और वस्त्रों से सुसज्जित सुंदर स्वागत द्वार बनाया गया था, वहीं पर सैकड़ों प्रेमीभक्त बेण्ड बाजे के साथ भजन गाते हुए और समवेत उच्च स्वर में जय-जयकार कर रहे थे।

पहुँचे। वहाँ दिव्य विभूतियों ने श्री गणेश पूजन, शिव-पार्वती और वास्तु देवता का पूजन किया। तत्पश्चात शिलालेख को अनावृत्त कर और फीता काटकर आश्रम भवन का लोकार्पण किया। खुशी और आनन्द से आश्रम परिसर का वातावरण भरा हुआ था। उत्साह और उमंग से भरे भक्तजन जय-जयकार कर रहे थे, ऐसा लग रहा था मानो समस्त संसार का आनंद आज धरती पर उतर आया है।

दिव्य विभूतियां सत्संग भवन में प्रवेश कर मंचासीन हो गये। महात्मा/बाईगण ने आरती-पूजन किया, उसके बाद सभी

श्रीमती शुभद्रा विमल सिवा, कमला सुवेदी ने पुष्प-माला और अंगवस्त्र पहनाकर उनका भव्य स्वागत किया।

प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारम्भ किया। नेपाल राज्य के मुख्य प्रचारक



श्री हंसलोक जनकल्याण समिति नेपाल द्वारा हेटौंडा में नवनिर्मित आश्रम का शुभोद्घाटन परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के करकमलों द्वारा संपन्न हुआ

प्रेमीभक्तों ने बारी-बारी से दर्शन-पर्सन किया। सभी दिव्य विभूतियां यहां आकर बहुत ही प्रसन्न थे।

अगले दिन 22 मार्च को हेटौंडा के टी.सी.एन. मैदान में दोपहर 12 बजे से गुरु वंदना और भजन-कीर्तन के साथ सत्संग कार्यक्रम का शुभारम्भ हो चुका था। सिलीगुड़ी से पधारे श्री प्रकाश प्रधान, रजनी सुन्दास, रंजीता जी और प्रह्लाद भट्टराई ने अपनी सुमधुर आवाज भजन गाकर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। दिव्य विभूतियों के मंचासीन होने पर श्री हंसलोक जनकल्याण समिति नेपाल के अध्यक्ष श्री हरिवंश भेटवाल, महासचिव श्री सुभाष कंडेल एवं प्रचारक श्री भोला प्रसाद थापा,

तत्पश्चात दिव्य विभूतियों ने दीप- भोला प्रसाद थापा ने अपने सम्बोधन



नेपाल राज्य की सनातन परम्परा के अनुसार पंच-कन्याओं ने अग्रगामी होकर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी का परम्परागत रूप से स्वागत किया

द्वारा सभी का स्वागत किया। तत्पश्चात महात्मा शिवकृपानंद जी एवं महात्मा आत्मसंतोषीबाई जी ने अपने सत्संग

मानवों के हृदय खिल उठते हैं, उनके अंदर उस दिव्य शक्ति को जानने की जिज्ञासा स्वतः उत्पन्न हो उठती है।

कलाकारों ने भक्तिपूर्ण नेपाली भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात परमपूज्य श्री भोले जी महाराज ने भजन “छोड़कर



श्री हंसलोक जनकल्याण समिति नेपाल द्वारा हेटौंडा में नवनिर्मित आश्रम के शुभोद्घाटन के पश्चात आश्रम भवन के साथ फोटो खिंचाते हुए परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी

विचारों से सबको लाभान्वित किया। महात्मा-द्वय ने समझाया कि जब महापुरुषों का आगमन होता है तो

दिल्ली से पधारे श्री राकेश सिंह जी ने जीवन और सत्संग के महत्व को समझाया। सिलीगुड़ी से आये भजन

संसार जब तू जाएगा, कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा।” प्रस्तुत किया; उसके बाद प्रेमीभक्तों से खचाखच भरे पंडाल



परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के स्वागत के लिए खड़े प्रेमी भक्त एवं सत्संग श्रवण करते हुए प्रेमी भक्त

को सम्बोधित करते हुए परमाराध्या सीता की जन्मस्थली है, जो सम्पूर्ण शांति और स्तब्धता छायी हुई थी, सभी माताश्री मंगला जी ने अपने सारगर्भित विश्व की महिला शक्ति की प्रेरणा और भक्तगण पूर्ण तन्मयता से सत्संग श्रवण



हेटौंडा, नेपाल के टी.सी.एन. मैदान में विशाल सत्संग समारोह में सत्संग श्रवण करते हुए प्रेमी भक्त समुदाय

प्रवचन का शुभारम्भ करते हुए कहा कि नेपाल भगवान पशुपति नाथ, महात्मा बुद्ध और जगत्ेश्वरी माता सीता की पावन जन्मभूमि है, इस पवित्र भूमि में आकर हमें दिव्य आनंद का अनुभव हो रहा है। यह पवित्र भूमि ज्ञान, साधना और मातृत्व की भूमि है। यहाँ भगवान पशुपति नाथ विराजमान हैं, जो हमें निरंतर भगवान का ध्यान-सुमिरण करने की प्रेरणा देते हैं। वे ऐसे आराध्यदेव हैं जो थोड़ी-सी सेवा-पूजा से प्रसन्न होकर भक्त को निहाल कर देते हैं। यह ज्ञान की भूमि है, जहाँ महात्मा बुद्ध ने जन्म लेकर सम्पूर्ण विश्व को अपने दिव्य ज्ञान से प्रकाशित कर दिया। आज भी विश्व के हर एक कोने में महात्मा बुद्ध के पद चिन्हों पर उनके द्वारा दिखाई राह पर चलने वाले लोग भारी संख्या में फैले हुए हैं। यह भूमि उस जगतजननी माता

आदर्श हैं। माता सीता के महान चरित्र ने रावण जैसे शक्तिशाली राजा का भी सर्वनाश कर दिया। हमें भी यहाँ आकर इनसे बहुत-बहुत प्रेरणा मिलती है।

माताश्री मंगला जी ने कहा कि यहाँ के प्रेमीभक्तों ने मिलकर सुन्दर आश्रम बनाया है जिसका हमने कल उद्घाटन किया। आश्रम सेवा और ज्ञान प्रचार का स्थान है। अध्यात्म ज्ञान प्रचार में आश्रम का विशेष योगदान रहता है, यहाँ हर सप्ताह भक्तगण सत्संग करते हैं, जिससे ज्ञान की ज्योति फैलती ही जा रही है। यह हंस नाम की ज्योति ऐसे ही नेपाल राज्य में फैलती रहे, इसके लिए सभी भक्तों को मिलकर निरंतर प्रचार-प्रसार में सेवा सहयोग देते रहना है। इस प्रकार लगातार एक घंटे तक श्री माता जी का प्रवचन धाराप्रवाह चलता रहा। सम्पूर्ण पंडाल में पूर्णतः

कर भावविभोर हो रहे थे। तत्पश्चात् बाद दिव्य विभूतियों के दर्शन, आरती, प्रसाद वितरण और भोजन भंडारे के साथ विशाल सत्संग समारोह का कार्यक्रम अपनी असंख्य स्मृतियों को प्रेमीभक्तों के हृदय पटल पर छोड़कर सहर्ष संपन्न हुआ। इस विशाल सत्संग समारोह में सम्पूर्ण नेपाल राज्य, बिहार, उत्तर प्रदेश और दिल्ली प्रदेश से भारी संख्या में प्रेमीभक्तों ने भाग लिया। इस विशाल सत्संग समारोह की सफलता में हेटौंडा क्षेत्र के पुलिस, प्रशासन, उपमहानगरपालिका, गणमान्यजनों, प्रेमीभक्तों के साथ-साथ दिव्य सेवा निकेतन आश्रम और उसके संचालकों का विशेष रूप से सहयोग प्राप्त हुआ। हम श्री हंसलोक जनकल्याण समिति नेपाल की ओर से सभी का हृदय से धन्यवाद और आभार व्यक्त करते हैं। ■

-: श्रद्धांजलि :-

बड़े दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि श्री देशराज सिंह भदौरिया का 26 मार्च, 2025 को गंभीर बीमारी के कारण असमय एक निजी अस्पताल में देहावसान हो गया है। श्री देशराज सिंह एक सरल हृदय और मधुर स्वभाव के धनी थे। सौम्यतापूर्ण व्यवहार के कारण उनके संपर्क में जो भी आता, वह सदैव के लिए उनके साथ जुड़ जाता था। स्वर्गीय भदौरिया का जन्म 2 फरवरी, 1971 को ग्राम गुर्जा बसोनी, बाह जिला आगरा में हुआ था। स्वर्गीय भदौरिया ने 13 वर्ष की आयु से ही अपनी पूज्या माता श्रीमती सिया दुलारी एवं पिता श्री लटूरी सिंह के साथ चांदनी चौक, दिल्ली में एलएसएस केटर्स के नाम से कैटरिंग का काम शुरू किया। तब से ही वे अनेक धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं, राजनीतिक पार्टियों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों के पारिवारिक आयोजनों में कैटरिंग का कार्य करते रहे। अपनी मेहनत, प्रयास और स्वादिष्ट व्यंजनों की पाककला की योग्यता के बल पर वे दिल्ली के प्रतिष्ठित कैटरिंग कंपनी के मालिक बन गये। लगभग 15 वर्ष से भी अधिक समय से वे परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के संस्थागत एवं पारिवारिक कार्यक्रमों में कैटरिंग का कार्य करते आ रहे थे, उनके द्वारा बनाया गया प्रसाद और स्वादिष्ट भोजन सभी की जबान पर चढ़ा हुआ है। उनके एक पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं जो उच्च शिक्षा प्राप्त किए हुए हैं। उनके देहावसान के बाद उनके सुपुत्र उनके कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। श्री देशराज सिंह के देहावसान से हम सबको भी गहरा दुःख पहुँचा है। हम संस्था के सभी पदाधिकारी एवं सदस्यगण परमपिता परमात्मा एवं श्री सद्गुरुदेव महाराज जी से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें। हम सभी संस्था की ओर से दिवंगत आत्मा को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।



- हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर, नई दिल्ली

-: पत्रिका संबंधी सूचना :-

सभी आदरणीय महात्मा/बाईगण, प्रचारकों, श्री हंसलोक सेवकों, कार्यकर्ताओं एवं प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन है कि अध्यात्म-ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु आप सब अपने गाँव/क्षेत्र में **“हंसलोक संदेश”** मासिक पत्रिका को अधिक से अधिक प्रेमी-भक्तों एवं अध्यात्मज्ञान पिपासुओं तक पहुँचायें। पत्रिका अध्यात्म ज्ञान प्रचार का स्थाई माध्यम है। पत्रिका के माध्यम से आपको हर माह परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के देशभर में स्थान-स्थान पर आयोजित जनकल्याण समारोहों में दिए गए प्रवचनों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा। साथ ही जनकल्याण समारोहों के सुन्दर-सुन्दर चित्र और विस्तृत विवरण पढ़ने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा माता जी/महाराज जी के कार्यक्रमों की सूचना, संस्थागत आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, जनकल्याण से संबंधित गतिविधियों के साथ-साथ विभिन्न सेवा उपक्रमों की भी सूचना व समाचार मिलेंगे। इसलिए प्रत्येक प्रेमी परिवार में नियमित रूप से पत्रिका अवश्य मंगाई जाए।

प्रेमी भक्तों/पाठकों को ज्ञात हो कि संस्था के सभी प्रचारक महात्मा/बाईगण तथा सेवकों के पास भी पत्रिकाएँ रहती हैं। आप उनसे हंसलोक संदेश पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं। डाक से पत्रिका की सुलभ प्राप्ति के लिए गाँव/क्षेत्र के सभी प्रेमी भक्त एक साथ किसी एक प्रेमी-भक्त के नाम व पते पर पत्रिकाएं बंडल रूप में मंगवा सकते हैं।

नोट:- (1) हंसलोक संदेश पत्रिका की रसीद काटते समय पाठक का पेन नम्बर, आधार नम्बर तथा मोबाइल नम्बर रसीद पर अवश्य लिखें।

(2) पत्रिका की एक रसीद (पर्ची) 100/- रुपये से अधिक की न काटी जाए।

(3) पत्रिका के लिए मनीआर्डर भेजते समय अपना पेन नम्बर, आधार नम्बर और मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

(4) यदि आप एक से अधिक पत्रिकाएं बंडल के रूप में मंगाना चाहते हैं तो मो.नं-9038675826 पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

मूल्य- एक प्रति- रु.10/-

हंसलोक संदेश पत्रिका मंगाने का पता:-

कार्यालय - हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड, भाटी, छतरपुर,

नई दिल्ली-110074 संपर्क सूत्र- 8860671326

विशेष:- पत्रिका संबंधी अपने अमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराते रहें। आपके सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शन का कार्य करेंगे। -सम्पादक



जनकल्याण समारोह - नई दिल्ली, 5 व 6 अप्रैल, 2025



नई दिल्ली, हंसलोक आश्रम। हंसज्योति - ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर के तत्वावधान में दिनांक 5 व 6 अप्रैल, 2025 को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में हर्षोल्लास से माता श्री राजेश्वरी देवी जी की पावन जयंती को "जनकल्याण समारोह" के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर देश - विदेश से पधारे हजारों प्रेमीभक्तों ने परमपूज्य श्री भोले जी महाराज, माता श्री मंगला जी एवं संत - महात्माओं के प्रवचनों से आत्मलाभ प्राप्त किया। माता श्री मंगला जी ने अपने प्रवचनों के द्वारा सभी प्रेमीभक्तों को मानव के जीवन में कर्मों का महत्व समझाया, उन्होंने कहा कि हम अपने जीवन में अध्यात्म के मार्ग से जुड़ते हैं और भजन साधना में मन लगाते हैं, तो हमारे जीवन में सुख, शांति और समृद्धि प्राप्त होती है, तभी हम दूसरे लोगों के लिए भी प्रेरणाश्रोत बनते हैं। अतः हमें इस अध्यात्म ज्ञान का प्रचार-प्रसार करना चाहिए।

बुद्ध पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएं

भगवान बुद्ध अपने समय के ऐसे महापुरुष थे; जिन्होंने सफल जीवन बिताने के लिए मध्यम मार्ग को चुना तथा अपने अनुयायियों को भी इसी का उपदेश किया। उनके अनुसार मनुष्य को न तो बहुत कठिन तप करना चाहिए और न ही अधिक सांसारिक सुखों में मन को लगाना चाहिए। वे पूरी तरह अहिंसावादी विचारों के थे तथा पशु बलि सहित किसी भी तरह की हिंसा के खिलाफ थे। भगवान बुद्ध के जीवन का मूलमंत्र था- "अप्प दीपो भव।" उनके अनुसार संत-महापुरुष आपको अध्यात्म ज्ञान देकर मार्गदर्शन कर सकते हैं; लेकिन साधना के द्वारा स्वयं ही अपने आपको प्रकाशित करना होगा। आइये, बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर हमें भी भगवान बुद्ध की शिक्षा को आत्मसात कर बोधिसत्व (आत्मज्ञान) को प्राप्त करना चाहिए, तभी दुःखों से हमारी मुक्ति हो सकती है।

- परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी



आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।



MOB: 8800291788/ 8800291288



/hanslok